

SANGEETA

KANAKATARA

ADOPTATION OF LALGOHAR

IN FIVE ACTS

BY

D. SITHA RAMA RAO

Published by

MADETY SANYASAYYA,

Book-seller,

RAJAHMUNDRY

First Edition 1000 copies

Printed and Published by K. Subbarayudu Bros.

COCANADA

Copyright Registered

1922

(Price As 12.)

ఆంధ్రాబుక్కు-డిపో, రాజమండ్రి.



కాగితములీయక ధలు.

హానిక ధలు.

మొదటి వాల్వాము	1-12-0
రెండవ “	1-8 0
మూడవ “	1 12-0
నాల్గవ “	1-12-0
ఆఱవవ “	1-8-0
ఆగవ “	1-12 0
ఏడవ “	1 12 0
ఎనిమిది “	1-12-0

తవలము.

సంపద్యతెలిక చి ల న	1-8-0
సుధాశరత్సంక్రము “	1-0-0
కన్నప్పముంజరి “	1 0-0
గుంపతి 1 వ భాగం డిటా	0 12 0
డిటా 2 వ భాగం డిటా	0 12 0
అమల్యాబాయి డిటా	0 12 0
సోమలత “	0-12-0
రాజరత్నము చి ల న	0-12-0
స్థితిచరిత్ర “	0-12-0
రామచంద్రవిజయం డిటా	0 10 0
రామకృష్ణపరమహంస “	1-0-0
భారతరత్నముంజరి డిటా	0 8 0
కృష్ణవేణి డిటా	0 6 0
సీమిందారి	1-0-0
పురింజయ	1-2-0
ఆశ్రుపాత్రాశ్రియము	1-4-0
పెళ్ళిపురంపావచరిత్ర	0 10 0
లలితకుమారి డిటా	0 10 0
సాక్షి డిటా	2 4 0
నానకుచరిత్ర డిటా	0 12 0
స్మరచరిత్రము డిటా	0 4 0

గయోపాఖ్యానము	0 8 0
గుక్కంగదచరిత్ర	0 6 0
కుశలవజయము	0 8 0
నలచరిత్ర	0 8 0
సీతాకల్యాణము	0 8 0
ద్రౌపదిమానసంకత	0 8 0
హరిశ్చంద్రముహనముంజరి 1వ భాగం	0 8 0
2 వ భాగం	0 4 0
మూగదాసుచరిత్ర	0 4 0
ప్రయంవదచరిత్ర	0 6 0
హరిశ్చంద్ర	0 8 0
నియాకరవిజయము	0 6 0
కృష్ణనందదాయిని	0 6 0
రామదాసుచరిత్ర	0 4 0
జయప్రదచరిత్ర	0 8 0
పురింధరదాసుచరిత్ర	0 8 0
కుచేలోపాఖ్యానం	0 6 0
కనీరుదాసుచరిత్ర	1 0 0
సీతాకల్యాణము డిటా	1 4 0
నాలోపాఖ్యానం కోర్కి	0 6 0
ప్రసాదచరిత్ర	0 4 0
సాంగంధికచరిత్ర	0 8 0
కుచేలోపాఖ్యానం	0 8 0
సుగంధదాసునికీర్తనము	0 8 0
కృష్ణచరిత్ర	0 4 0
సాక్షిచరిత్రము	1 8 0
లక్ష్మీబాదుచరణం	0 8 0



వలయువారికి వాయిము:—

నూదో సన్యాసయ్య,
ఆంధ్రాబుక్కు-డిపో, రాజమండ్రి.



సంకీర్తన : ౧౭౫.

సా' పాపము నాము.

(1) 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040

အနောက်မှ အရှေ့သို့ အရှေ့မှ အနောက်သို့

ప. శ్రీనివాసులు పు. ప. గౌరవాల మానునానకి సమాధికి
 గోవుమా నమో" సమాధి

పొలివే ముడిలపొప్పి | సేవే గూవిస్వేమూడు సేవల కన నాది
దేవుడవ్వు మాచుర | శ్రీవి
భావమలర గిత్తి కనుభావించి కన తార నాట రూపరూప
దలచి నీసత్కృతజూప సోగితియి || శ్రీవి |

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

[ప్ర] వేము:—చిత్త సేవకు—మూర్తి యగు విభాగము.

(2) బెహగూరాగము ఏది తాళము.

ఈసంసారానికై⁽¹⁾ । నేనెక్కడదాశాదా" ఈస "

హాస్యానన్ సోమేషమున. ఏయచట బ్రతుకగనోచిన్
యేసంగతి దలపోసనన్ కడువిపత్తముగ. దోచిమదిక్
చీ సంసారము । చీచీ భోము । చీచీ బాగము.

చిత్రీ—(విశారదునిఁ నూచి) మంత్రీ! విశారదా! ఎప్పుడు చూచినను మదికి సేదో ముకచింత కలుగుచునే యుండునుగదా!

శే. గీ. ఎట్టి పుష్పాబుజ్జోచేసి ♦ యెసఁగునట్టి
పుష్పమూర్తికేగాని నా ♦ బోటివాని
కెల్ల సమకూటు సంగోష ♦ మెల్లవేళ
లగు; నిర్భాగ్యుడను నౌచు ♦ నలరుకతన.

విశా—రాజేంద్రా! సివిల్లు నచించుటకుఁ గాగణము నేనకా
పాపజాలక యున్నాను.

చిత్రీ—పవెఱుగిని దేమున్నది?

శే. అన్నయటలచు నాపరున ♦ నాచితభక్తినిబూనడాయె; వి
ద్యనున్నట్లైన యార్యులు కృ ♦ పక వచియించెడుమాట లెంచ
యన్నఁజూచుకోకు; పురి ♦ చున్నజనంబుల వేచుచుండె; వా
గెన్నయ బుద్ధిచెచ్చుకొను ♦ నేమియు దోచగుతమ్ముడక్కట
పెక్కురీతుల నాతని కనేకనితులు నక్కానిందితిని. దుష్టబుద్ధియ
నామము సాగియు జేసికొనుచున్నాడు. వాడెట్టి కూరకార్యం
లొనర్చుచున్నను; నేకగర్భజనితుం డగుటజేసి నాకు వానియందు
త్పల్కును పోషియన్నది. పోషియ్య. శిక్షింపమన్నచో నందులకి
గూడ చిత్తము సన్నులొపవయ్యెను. నవ్వునాబున వ్రించుచు;
వానిని సద్వర్ణంబున నెల్ల బెట్టఁగలనో యాపాపజాలక యున్నా

విశా—దేవా! ఆతఁడేక్రిమముగా నుజుచుండగుననితలం చెడ

చిత్రీ—చుతే! అది యెక్కడిమాట.

శే. గీ. పుష్పాబుజ్జోబుట్టు బుద్ధులు ♦ పుడమియంగు
బుడకలనెకాని పోవంచు ♦ బుధులు పల్కు
వాక్యమాలింపవే? నీవు ♦ వరసఖుండ
కుమతి, సుమతియగునె వట్టి ♦ కోర్కెగాని.

తమ్ము విషయమై యట్టిభీమ నంకులనలన బ్రయోజనములేదు.

[తెఱలో కోలాహలము.]

విశా—(నేవకుఁజూచి) నేవకా ! ఆకలనల మెరుయో విచారించి రమ్ము.

నేవ—చిత్తము. (నిష్క్రమించి వెంటనే పోవలెను) దేవా ! పురజనులు కొండలు తమ దగ్గినార్చి నచ్చియున్నది.

చిత్ర—మంత్రీ ! కిగొలలకు వచ్చియున్నారోకిదా ! (ఆలోచించి) తమ్ముని గుహ్యత్యంబుల జెప్పుకొనుటకే వచ్చియున్నారని శంకెదను. (నేవకుఁజూచి) నేవకా ! వానిని వివరమునఁ జెప్పు.

నేవ—చిత్తము. (నిష్క్రమించి వెంటనే పోవలెను) బ్రవేదించును.)

(3) పౌరులందరు కలన పాడడి పాట.

బేహగురాగము ఏకతాళము.

ప॥ దండాలండో బాబయ్య మీపాదాలగు దండాలండో॥

॥ ప॥ దండాలండో బాబయ్య మీపాదాలగు దండాలండో॥ దం॥
గుండగుండు మీదప్పబుద్ధి మమురూఢియై బాధంపుచును
మెండుగను గుండగములు । మేదినిజనులకు నెల్లచనుండును॥
గండము గండము యీపురమందనగనగా ముక్తమేముండినచో
జెండడ మాకంతములక । యెందుకు మాకీయమదుండన
చాలో॥ దం॥

ప్రథమ పౌరుఁడు—(రాజుఁజూచి) మహాహీనము !

సీ. కడుపులోపల నీరు ♦ కదలకుండంగ ని

న్నాళ్ళు నీదగు పాల ♦ సంబునందె

నాలుబిడ్డలతోడ ♦ నతిసౌఖ్య మందుచు
 నున్నవారముకాని ♦ యర్విత్రేడ
 నేటికేమందు; మా ♦ పాటు లెవ్వడుగాం
 చి కరుణదాల్చి ర ♦ క్షింపదలచు
 నిత నొకదినమైన ♦ నేముండఁగాఁ జాల
 మీపురంబున మీరు ♦ మీయరుజుఁడు
 తే. గీ. హఁలుగగనుచుఁ బ్రజ్జ్వలించెని ♦ యవ్వతలము
 నేలుకొనుచుండు డింక యే ♦ మే మేగువారి
 మాంబిడ్డలతోడ ను ♦ గాఁబ్రొక్క
 సెలవాసగుము పోగుము ♦ శుభ్రుగితిని.

ద్వి-పా—

మ. ధరణీనాయకి, మేముబాంబు కడుబా ♦ ధల జూప, మొక్కింత నీ
 కరుణాదృష్టిని జూడకున్నఁ బురివే ♦ గంభాస, యెందేనియన్
 సరగ్గ జేరి నుఖాపఁగాఁగలము సు ♦ స్తో మమేపారఁగా
 నరయన్రెండు తెలుంగులందు భవదీ ♦ యాభీష్ట మెల్లన్నదో.

ధన—ఇగకను రాజుగారియభీష్ట మెల్లన్నదో యని యడుగు
 చుంటివా. వారియభిప్రాయ మెల్లండును? వారి తమ్ముడుగారిని వారు
 కంఠించెదరా యేమి?

చిత్ర—(పౌరులనుజూచి) పౌరులారా ! ఏమేమీ ! మీరు
 మంతమ్ముడగు దుష్టబుద్ధిచేత వెతలబాల్సోయాఁబడి నచ్చితిరా? అన్నా!
 ఎంతకష్టము?

[దుష్టబుద్ధి ప్రవేశించి చాటుగానుంచును.]

దుష్ట—(తనలో) మీరు నావిషయమై యగ్రిజునితోఁ జెప్పు
 టకు వచ్చినారుకాబోలు. ఏమనిచెప్పెదరో విందునుగాఁత.

చిత్ర—పౌరులారా ! ఆకుట్టబుద్ధి మిమ్ముల నేతెలుగున బాధల బెట్టుచున్నాఁడో యెటుంగివచ్చునా?

ధన—రాజేంద్రా ! “సిగ్గు వదలినవానికి భయముండ”దట. చల్లకువచ్చి ముతదాచినందువలనఁ బ్రయోజనం బేమియున్నది? (తక్కినవారిం జూచి) మీకష్టములు రాజగారి⁶ మొట్టవెట్టుకొనుడు. వారికంటె మనకు దిక్కెవ్వరు. ఏమిటో ! మన కడుపులోనున్న మంటచేత యాపుసు విడిచి వెళ్ళిపోమని చెప్పుచుము గాని, మన మట్లు సేయనూలేము. రాజగారు మనలను ఎదలనూలేరు.

హ్రి-పౌ—(రాజుం జూచి) దేనా ! మీసోదగూడగు దుష్టబుద్ధినిగూర్చి యిదిచేసె, నదిచేయలేదని చెప్పుటకు వలనుపడదు.

తే. గీ. వలయునంతటి భాగ్యంబు ♦ గలిగియున్న
ననుభవించురుగాని మా ♦ యట్టి బీద
ఒరుల నేచటన్యాయంబె ♦ ట్లొకతులకు
నలదె మా బాధఁబాడుగఁ ♦ బార్థివేంద్ర.

ద్వి పౌ—

మ. సురసేవించి, యనేక పుష్పచగితుల్ ♦ చుట్టూ దనుగొల్పిరా
దిరుగున్ కేధుల; గారిణాబరయకె ♦ తిట్టన్ బ్రజ్జఘాబునున్
బరకాంతామణి కంటబహిగుణన్ ♦ వర్ణించి మెటాడు; ని
కరణిన్ వర్ణిలు దుష్టబుద్ధిగుణముల్ ♦ ట్లొపాలచూడామణి.

హ్రి-పౌ—

తే. గీ. మొన్న సాయంత్రమున మా ♦ కన్నెపౌరుగు
వారి గృహమానకునరిగి ♦ వచ్చుచుండ
భయముబూనక దానిపైఁ ♦ బడఁగ నెంచె
గటగటా ! యేని తెల్పుదు ♦ ట్లొకత లేంద్ర.

చిత్ర—హరి ! హరి ! ఎంతమాట !

ధన—మహారాజా! నేనును మా పూర్వులముగూడ యీపురంబునందే పెక్కిండ్లనుండి వసింపుచుంటిమి. ఎన్నఁడును మేమిట్టికష్టంబుల నెఱుంగము. మహాప్రభూ! నేను వయస్సు మీఠినవాడను. నాప్రథమ భార్య గతియింకగా మిగులద్రవ్యము వెచ్చించి యొక చిన్న దానిని వివాహము జేసుకొన్నాను. ఎహికంట నైన నది పడినచో వా రికంష్ట కుట్టుననియెంచి యింటినుండి యివతలకురాకుండఁ జేయఁచుంటిని. కాని, యెప్పుడయిన నేబంధుల గృహంబులకైనఁ బోవుటతప్పనియ్యెనుగదా. దేవా! మీరు పాలించుకర్తలని సిగ్గుపడచి చెప్పుచున్నాను. మీసోదరుడగు దత్తబుద్ధి యామె నెప్పుడూచెనోగాని యొకదినంబున సంధ్యాసమయంబున, మాయింటికి నలుగురుతాగ్రుబోతులతోవచ్చి 'యే వియో నగలుకావలెనని చెప్పి కొన్ని వస్తువులనుదీయించి, నన్నుబాచి.

కం. “ కుశువను గట్టను గలిగియు

బుడతల ముద్దాడుభాగ్య ♦ మునునోచవు; సీ

పడతిని నాకడకంపుము

కడువడి”యని పలికెనట్టి ♦ క్రూరగుణంబో.

అందులనాతనికి నేనెన్నో బుద్ధులఁ గలపిఠినిగాని యాతండు నన్నుఁ గాంచి “ముసలివాడవు. నీకీ జగన్మోహన విగ్రహమగు భార్య యెందులకు? నాతోఁ గాపురముసేయుటకుఁ బురుషు. కొలదిదినంబులలో నేను రాజునగుదును. అప్పుడీయవతి పట్టమహిషి యగునని నుడువుచున్న యవసరంబున నాకస్మికముగా నాభార్య నన్ను భోజనమునకులెమ్మని చెప్పుటకచ్చటికి వచ్చెను ఇతనితోఁ గూడియున్న తాగ్రుబోతులకలడేమి నైగఁజేసెనోగాని వారు నలువురును బలవంతమున నామెను బట్టికొని, గొల్లుగొల్లున విలపించుచున్నను విడువకనేగిరి. ఈతఁడును బరువెత్తెను. ఎట్లాకొంతసేపటికి బ్రాణంబులతో నాభార్యతప్పించుకొనివచ్చినది. ఆమెకడనున్న వస్తువులన్నియు దోచుకొనిరి.

దాష్ట్ర—తనలో, ఓరీ ! వైశ్యుడా ! నీయిచ్చవచ్చినయట్లు చెప్పము. నిన్ను దుదముట్టించెదను.

చిత్ర—(పౌరులంజూచి)

తే. గీ. హరిహరీ ! యెట్టికష్టంబు † లందవలసె
ధరణిజనులార మీరు, సో † దరునికతన
తమ్ముడంచును నాచు చి † త్తమ్మునందుఁ
బరమ కృపదాల్చినందుకుఁ † బ్రీతిఫలంబు.

చిత్ర—(పౌరులనుఁ జూచి) పౌరులారా !

(4) కన్నడరాగం - ఆదితాళము.

ప॥ పురజనులారా మీరగుగుశు.

అ॥ ప॥ వెరగుపడక నిక నిర్భయముగుటై జరి యింపును జగతిన్ సం
తోషమున॥ పుర॥

అరగ నాసహృదరుడని నామని కరుణితున వానిన్
శిషింపక॥ పుర॥

మ. అవనీర్జర పాదసేచకుఁడనై † యశాంత మన్యాయు దు
ర్వ్యసాయాదులు జేరకుండ నవని † బాలింపుచున్; బారులన్
సువివేకంబున నేలువాడె నృపుడై † శోభిల్లు; గాకున్నచో
నవనీచాలక నామమాతృజనుడి † యార్యుల్ విఘోకింపగన్.

తే. గీ. తమ్ముడంచు దలపక చి † త్తమ్మునందు
వానిదండించి మిముఁబోతు † భవ్యకరుణ
జింతఁబాసి గృహంబుల † జేరుడింక
బారులార ! సమంచితో † దారులార.

మీరింక సంతాపంబుల బాయుడు. నేను దుష్టబుద్ధిని గారాగృహ
బద్ధునిగాఁ జేసెదను.

పోతులు—(రాజుజూచి) మమ్మురక్షించు భారమాతయు నీ
దైయన్నది ఇంక మేము పోయినచేదము.

చిత్ర—మాత్రీ! విశారదా! పోతుల దీనాలాపాలుల వింటివి
కదా. ఇంక నాకా దుష్టాత్ముడగు దుష్టబుద్ధియెడల నేరొక్కింతయు
దయదలాపరాదు. నానినికా గారాగ్రహవాసునిగాఁజేసినగాని యీ
యల్లరులకాదు.

విశాఖ—దీవరవారి చిత్తశుద్ధి యట్లు సేయవచ్చును.

చిత్ర—సరే. దీనినిగూర్చి నీవనియెడలనే యాలోచితము
రమ్ము. పోయెక్కినది.

(ఇరువురూ నిష్క్రమించుచున్నారు)

రంగము:—చిత్ర సేవకుఁడు మూలపురము.

[చిత్ర సేవకుడు నయ్యాతలాబున నిద్రించుచున్నాడు]

[ప్రవేశము:—దుష్టబుద్ధి.]

దుష్ట—(శనక) బేరా! పురజనులవాక్యంబులాలించి, నాయ
గ్రంథిండు నన్ను గారాగాఁబడఁగాఁ జేయఁజెరుగా. ఏమీ! ఆ
తని సాహసము. అగ్రంథిండుగదా! నీతఁడే రాజ్యాధిపతియై సమస్త
సౌఖ్యాలుల కరుణవింపుచు, నానాధితులుల నీడేర్పక, నాకుఁ గవ
లసినాత దన్యంబులొసంగి యని యిచ్చదట్టివాఁడ జూచుచున్నాఁడు.
ఇంక నే నీతనియెడల నశ్రద్ధవహించి యుంటినేని యీతఁడు నన్ను
గర్హింబులపాలు జేయును. మఱియు,

తే. గీ. ఇతఁడు జీవించియున్నచో ♦ క్షీణితలమున

నాకు స్వేచ్ఛానిహారము ♦ నకును భంగ

మొదలగుచుండును గావున ♦ మదివి గరుణ

దలఁపక సతనిఁ జంపుట ♦ తగును నాకు.

అట్లానట్టితినేని నేనే రాజును కాగలను. అప్పుడు నన్నెవ్వరు వారింపగలరు ? (ఇంచక యూరకుండి ఆలోచించి) ఏమిటి ! ఏకగర్భజుతుండగు నాయన్నను వధింపఁ దలంచుచుంటి. ఇయ్యది ధర్మమైనకార్యమా? దీనింజూచి లోకులుమెచ్చెదరా ? ఇట్టి మహాపాపకార్యంబొనరించుటంజేసి నాయాత్మ తిరుగ విముక్తి నొందనటవగటి ఘోరనరకంబునఁ బడునుగదా. ఓ చిత్తమా ! నీవెంతైనను దగినదానవు ? ఒక సమయంబున నగ్రిజూని జంపఁ బ్రేరేచెదవు. ఒక సమయంబున మానుదువు. (ఖడ్గమును జూచి) ఖడ్గమా !

ఉ. సంగరరంగమందు ఘన ♦ శత్రుజనాబుల నెత్తు టేర్చి న

భయంగనమాచరింపుచును ♦ భవ్యయశంబునుగాంచుచున్నది

పుంగ్రుపఁ బూనకింతయును ♦ భూమిని; నగ్రిజూగూల్పనిట్లు నా

కుంగు బోధ జేసెదవె ♦ కోవిదులెల్లరు దీని మెత్తురే.

ఆహా ! ఎట్టి కూరాత్మనకైనను ప్రాణివధఁ జేయుటకుఁ జేతుఁడవుకదా !

ధృ. జనకుండాయనునట్లు నన్ననిశము ♦ సుప్రీతిహోగాంచె; న

జ్వనముల్ బోయెడిహోనఁ బొమ్మనెను; ను ♦ జ్ఞానంబునార్జించుమా

యనిబోధించె; దుష్టకృత్యములనే ♦ యంబోకుమఁచెప్పుడు

ననుదంశించెను; వీనిజంప నకటా ♦ నాచేతు లెల్లాఁడెను.

ఈతఁడు నాకేమి యడకారముజేసినాడు. నేనే కూరకార్యంబులజేయుటఁజూచి దండింపనఁచుట దోషమా. ఈతఁడు నన్ను శిక్షింపఁ

దలంచినాడనునది సాకుఁగాఁ జేసికొని యీతనిని వధింపనా ? (ఆలోచించి కోపము దెచ్చుకొని) చంపకయున్నచో నకలభాగ్య భోగంబులును నాకెట్లవడును. రాజ్యమునకై యన్నదమ్ములలో నొకరిమొకరు వధింపఁ దలంచికొనుట వీరక్షత్రియ సంశాచారమేయై యున్నది. ఇ

ప్పుడు నేనూరకుంటినేని నన్నితఁడు చెరియందువైచును. పౌరులెల్లరును

నన్నుఁజూచి పరిహసించుటకు మార్గము గలుగును. ఏమైనను నాకే
పాపముగానిమ్ము. పుణ్యముగానిమ్ము. నే నీతనింజగపి సకలరాజ్యంబు
ను వశముజేసికొని యిచ్చాలీలఁ బాలించెదను. (శయనింపుచున్న చిత్ర)
సేనునిఁజూచి) ఇదిగో! ఈతఁడు సంపూర్ణ నిద్రావస్థనున్నాఁడు. ఈతని
వధియించుట కిదియే మంచిసమయము. లోనికెవ్వరును బ్రవేశింప
కుండునట్లు చూచుచుండమని నాయనుచరులను ద్వారముకడఁ గాపు
చితిని. ఇంక నాకేవిధమైన భయంబునులేదు. ఇక నేవీరీతిని దీర్ఘాల్ప
చనము సేయుచునుంటి నేని యీతఁడు మేలుకాంచఁగలఁడు. అప్పుడు
మోసమువాటిల్లును. (ఏడుటఁజూచి) మందిర పాలకుండగు బాధరు
ఖానుఁడుకాబోలు మేల్కొనుచున్నట్లున్నవాఁడు. (పరికించి) లేదు
లేదు. ఇటునుంచి యటు యొత్తిగిలినాఁడు నేనింక శీఘ్రంబుగ నాకా
ర్యము జేసికొనుట మంచిది.

సీ. కరుణారసమ! నన్నుఁ ♦ గతినాత్ముఁ డనబోక

యరుగుమీ! పుణ్య జ ♦ నాళికడకు

శాంతమా! దయఁబూని ♦ సంగ్రామ విశ్రాంత

లైన వారికడకు ♦ నరుగుమింక

సంతోషమా! నీవు ♦ త్కృపు వధానంత

రమ్మున నన్నుఁజే ♦ రంగరమ్ము

శృంగారమా! నీవు ♦ శీఘ్రంబుగాఁ బొమ్ము

భవ్యమతులగు దం ♦ పతులఁజేర

తే. గీ. యగ్రిజ వధింపనెంచితి ♦ నాత్మయందు

గాన నాయందు మీరలు ♦ గరుణఁబూని

యావహింపుడు నన్నును ♦ నద్భుతోగ్ర

రాద్ర వీరభయానక ♦ రసములార.

(చిత్ర) సేనుని సమీపించి ఖడ్గమును జూచికొని) ఓ ఖడ్గరాజమా!

తే. గీ. నిన్నుఁ బరమగురునిగాఁగ ♦ నేనకాని
పగిది; ననుగన్న జనకుని ♦ భంగి; మదినిఁ
దలచి; హస్తంబునందె నిన్ ♦ దాల్చియుంటి
నగ్గిజనిజంప వేగ సాయంబుగమ్ము.

(కత్తిచే జల్లేసేనుని కంఠమును నటుకుచున్నాఁడు)

(నిద్రాపోవుచున్న జాఫరుఖానుఁడు లేచి యిటునటు జూచుచున్నాఁడు)
దుష్ట—అడుగో జాఫరుఖానుఁడు నిద్రలేచినాఁడు. నెమ్మదిగా
నేనిచ్చటనుండి పోయెదను. (నిష్క్రమించును.)

జాఫర్—(వెళ్ళుచున్న దుష్టబుద్ధినిజూచి) కోకోకో. మాకే
సెల్వాతేకూడా లోపల్కివచ్చినార్. ఎవరదీ! పిలుస్తే మాటాడేదీ
లేదు. (లేచి చూచి) హా. దుష్టబుద్ధి హ్యంకు కైకూ ఆయే. వో
బడా మాదర్చోద్. దాడ్కక్తేక్యా. (ఇంచుకనడచి చచ్చిపడియున్న
చిల్లేసేనుఁ జూచి) అరే! దుష్టబుద్ధి! బద్మాష్! దగుల్ బాజీ! కైసీ
కాం కరేరేతూ! (అటునిటుజూచి, అరే! కామపాల! క్యాకక్తేరే.
ఇటరారాబాబూ! మస్కీ కొంఘామున్గిందీ. జల్లీ ఆరే! జల్లీ ఆరే!
(అటునిటు పరుగెత్తును.)

[కామపాలుడు ప్రవేశించును]

కామ—ఏమిటోయీ! సాహేబూ! ఈగందర్గోళము. పిచ్చి
వారివలె బరుగెత్తుచున్నావేమి?

జాఫర్—గ్రందర్గోళం యేమిటీవోయి. అంతాలయిపోయిం
ది. మనమహారాజ్ మర్గయేరే బాబా!

కామ—మహారాజేమిటి! మర్గయాయగుటయేమిటి? వల్లకాటి
భాష సరిగా చెప్పుదూ?

జాఫర్—మనసీత్తర్సేన్ మహారాజ్కూ ప్రస్కాభాయీ త
ల్వార్సేగర్దన్ ప్రడాదియారే. అల్లా! ఈలోకంమే యెంతయెంతవాళ్లు
ప్రడాత్. నాళి నిండా దుఃఖంవస్తావుంది.

కామ—సంగ తేమిటో తెలుపక యిట్లు గందర్గోళము చేసెద
వేమి?

జాఫర్ —ఆరే! బుద్ధిలేనిమస్సి! నీకే తెలిసేదేలేదురా? బాబూ
మనరాజ్కు ఆడితమ్ముడు దుష్టబుద్ధి కత్తితో.

కామ—చంపినాడాయేమి?

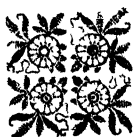
జాఫర్ —టీక్ బాత్ బోలే. సచ్ కతల్ చేసినాడ్.

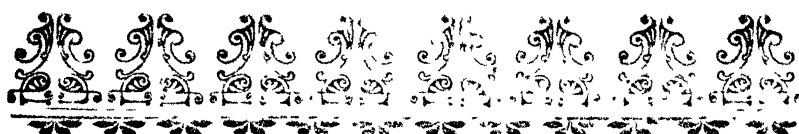
కామ—అయ్యయ్యా! ఎంతమాట! ఇకమనగతియేమి? ఈ
సంగతి మంత్రీగారికిని రాణిగారికిని నెఱిగింపవలెను.

జాఫర్ —ఆరే మాకే రాణిమొఖంసూడడాన్నీ మనస్సురాదు.
మాకీ ఘండుకొనివున్నప్పుడు ఆ దుష్టబుద్ధి ముదిరకీ వచ్చి అన్నకు
పోడిసినాడ్. మాకీ జిజ్ఞాసెలిసేలో వాడ్కి పాణాల్ తీసి పాతిపెట్టే
తో నిండాగాగుండున్. భాసి! తప్పిపోయింది. పాతిపోయినాడ్. కా
ర్యం మించిపోయిందిరా, మన్నీ అల్లా యిట్టరాళాడు.

(నిష్క్రమింతురు.)

ఇది ప్రథమాంకము.





సంగీతకనకతార.

ద్వితీయాంకము.

౧౫౩౪

రంగిమూ:—చారుమతి చూడఁజూపురము.

[చారుమతిని దలఁచుకొనిపచ్చచు ముష్టిబుగ్గి ప్రవేశించును.]

(5) పాట.

చారుమతి—ఓరీ కూర మహాశైలికృత్య సోదర హత్యగావించి
యిరీతినిఁ బాఖ్యెట్ల నెకెమిదుచ్చునిరా॥ ఓరి॥

దుష్ట—నారీశిరోమళి చారుమతి రమ్మ మారాడబోకు మరుబారి
కోర్వను.

చారు—హరహరా! నియన్న భార్యనురా అరయగానికు నేనదెచెయరా.

దుష్ట—మరుప్రము మనపూర్వవరుస మీతిరిగాను మానిసికొ గలసి
తీరెదను నమ్ము॥

చారు—(పరుగెత్తుచు) హా! ఎంతకష్టమొంతకష్టము. (భర్తను
దైశించి)

సు. తనయున్, బుల్గిననన్ననువ్విడిచి ని ♦ ర్తాక్షణ్యతన్ బూనిహా!

చనినావే ! సురలోక సౌఖ్యముల్మకై ♦ ఛండాలుడీ దుష్టబు

ద్ధిని వారించి, మదీయమానమిపుడ ♦ శ్చిన్ గాచుపుణ్యాత్మకుల్

గనరాఁరైనిజేత ! నన్నుక్రిపణ్ణో ♦ గానంగ నేతెంచుమా.

దుష్ట—గతించిన ప్రాణేశ్వరునిగూర్చి విచారించినచో నాతఁ
డు మరల నరుదెంచునా? చచ్చినవానికై పలవించినచో నేమిప్రయో
జనము ?

మ. తరుణీ! నివర్తిగూర్చినాడ; నింకి జి ధి త్తింబందుశోకించినన్
మరిలన్ వచ్చునె; విక్కులేరెవరు నిన్ ధి గాపాడ; నిప్పట్ల, నీ
ధరణీ కాంత పరించెన్ బతిగ; సం ధి తాపంబునుంబాసి; ను
సిర్థమోదంబునఁ జెట్టఁబట్టుముననున్ ధి శీతాంశుబింబాననా.

నేనుతప్ప నీకెవ్వరును దిక్కులేరు. నన్నుఁ బూదినచో సర్వవిధంబు
లను సౌఖ్యమందెదవు. ఇందులకు సిగ్గుఁబడింబున సందియంబందకుము.

చారు—పాపము శమించుఁగాకి! శమించుఁగాక! అవివేకత
చేత నిట్లు పనికితివి. అర్థరాత్రియందు నీయగ్రజండు నిద్రావస్థనున్న
సమయంబున మందిరింబున బ్రేవేశించి వధించిన మహాపాపము చా
లక నన్నుగూడ దలంపుచుంటవా? ఇట్లు పలుకుటకు నీకు నోరెల్లువ
చ్చినది?

చ॥ జనకునితోడఁ గుల్కుండను ధి జన్మనికంతము ద్రుించినైచి, యా
తన సతిపైన నన్నుఁగడు ధి దారుణవాక్యము లాడుచుంటివే
జనవిసమాననెందుగద ధి చక్కఁగనిమది నెంచిచూసి స
జ్జన ములుబోవుమార్గమున ధి సమ్మతినేగుము పుణ్యమజ్ఞేషుఁ .
అగ్రానిభార్య తల్లిత సమానము. భర్తమరణంబునకు నాచిత్తమం
తయుసంతాపమయంబు యున్నది. దాసికిఁదోడు నీవ్వికి కూరవాక్య
ములచే నన్ను ముఁఁబురి కిష్టపెట్టెదవేల? ఇయ్యది నీకు ధర్మము
గాదు.

దుష్ట—ఓరమణిశిరోమణీ! ఈనీతులకేమి? ఈకలికాలంబున
నియ్యవి పాటించువారెవరు! నేను నీయెడలఁ గాతన్యమువహించి పలు
కుచుంటినని తలంపకుము. ఇయ్యది ప్రార్థనాపూర్వకమని తలంపుము.

చ॥ తొలకరిమించు తీగగతి ధి దోపఁ దఱుక్కునినీవు ముంగలన్
నిలువగ; గుండెఝల్లుమనె ధి నీదగురూపవిలోస సంపదల్

కలికిరొ కాంచినంతటనె ♦ కాముడు దర్పముజేర్చినన్నును
నిలువగఁనీయకుండె; రమ ♦ గీమణి! సత్కృప నాదరింపవే.
చారుమతీ! నేను పరుండనుగాను. నాయెడల ౧౪ నిరాశ్రిత్యమువ
హించుట నీకు ధర్మముగాదా.

చారు—టయీ! సమస్తవిషయములును చెరిసిన నీస్థితిపలు
కుచుగడుటకుఁ గారణము నూహించుటక యున్నాను. నీయెడల నొ
క్కింతయు దోహము జేసియెఱుంగఁగల నిన్నెప్పుడును గన్నకుమారు
ని చందంబున నరసినాఁడు. దుష్టపథానువర్తివగు నిన్ను సత్పథంబునఁ
జరించుమని బోధఁ జేసెను గాని మఱియొకయును నేయలేక. అట్టి పితృ
సమానుండగు సోదరునధించి, తల్లితోఁ నొప్పురాలైన, సమస్కరింపఁ
బడదగినదాననై, వదిలెనగునన్నుఁగూడ గమకించెదవే?

ఉ॥ నిందను గొంగుగట్టకొన ♦ నీవికలజ్జ బరిత్యజింపుదున్
గొందలపాటుఁ బూచికడు ♦ గొంతుదనగబున నన్నుఁ గోగునే
మందమతీ! బుధాగ్రీణులు ♦ మానససీమల గీనిజూచి న
న్నుం దలయెత్తనిచ్చెదరె? ♦ యోపుకొలందిఁవాల్లుబెట్ట రే.
మఱి! “ కాముకస్య కుశోల్బజా ” యనెడు ముఠువు సత్యముజేసితివి
కదా. చాలుఁజాలు. నీకు మంచిబుద్ధి దైవంబు బ్రసాదించుఁగాక!

దుష్ట—లన్నులమిన్నా! ఈమాటలతో నేమిప్రయోజనము
న్నది?

నీ॥ నిన్నమొన్నటిదాక ♦ సీభర్త భుజపీఠ

దనరారియున్నట్టి ♦ ధరణికస్య

నాబాహు దండమ్ము ♦ ననునిల్చె; నిం

క నాయానతి ♦ నిఖిలజనులు

దలలఁదాల్చి నడచె ♦ దరుభక్తిజూపుచు;

సకలసామంత రా ♦ జన్యబృంద

మరిగావులైయుండు ♦ రతివచో నిజముగా

జ్ఞాదు ముఖిలూప ♦ నింతియేని

తే. గీ. యుక్తేయూగ భావించు ♦ సవనితలము

దాశీరిపులమగు భయంక ♦ సంపదగుచు

నన్య మగుూడ నేవేల ♦ యాత్మయంగు

సందియంబును భావించు ♦ ముద్రదన.

నాయక్ భావ పునే విభాబుల జూచెనో యన్య నేనుగూడ నిన్నుఁ జూచెదనని తలంపును.

చూడు.....! సందర్భ! ఇట్లమాయల బహిరంగమగు సేనాలుక వేలుచీలికలు గాఢానయమృతినా, పరాగినల గవయసెంచుట మహాపాపంబు సగు నోచగు గాజాళి.

శా. తేనీపెరుగు సేనుబుట్టెనుదకో ♦ తేనుమగే గూపురికో
వారింజీవనో ధృమ్యాపితకో ♦ వాంఛిపనో; కానిచో
రారూర నిమనవ్వినదల నొన ♦ ర్వికో నష్టచిత్తుడవై
యూశీశికోననుఁ గూడఁగాఢులగువే ♦ సీనో! మలధ్వంసకా.

ఓయీ సోమ మణిసరితలంచి శాంతంబుబూని నేరచిఱుచు వాన్యంబుల నాలించి సాలంబులగు రాసుము సందగనధచేగలిగిన పాపము జూలను. ఎన్నికల జన్మములైనను ముది విషవగు. స్వామిముల యెచుట సీమాయలుచు దుష్టములుచు బంకెరార్ప.

నష్ట—తరుణ !

తే. గీ. ఎట్టిమాయలఁ బర్చిన ♦ నేమిలాభ
మెన్ని తంత్రములైనెన ♦ నేమిఫలము
తరుణి నినుఁగూడి సౌఖ్యమౌ ♦ దంగలేని
జన్మనిష్క్రయోజనముగాదె ♦ క్షౌతలమున.

చ. పలుకులు వేయునేల విను ♦ వైదలిసిపలు మోహముగఁబట్టె
దెలిపితి మోహమాపఁగను ♦ నేరకయుంటిని; మన్మథుండు పూ
వులశరముల్ మహాగ్రోతను ♦ బొచ్చిపోయెఁగము నేయునుఁ దాకి
గలియుము నన్ను వేటుగతి ♦ గానక పూనుధాకరాననా.

మ. ధరణీభారము నేవహించితిని దో ♦ క్షర్పింబు దీపింపఁగాఁ
బరిపాలించెద నెల్లవైరులు భయ ♦ భాగతాత్మహావల్లనన్
గరుణాదృష్టిని జూచుమానుసుచున్ ♦ గాంక్షింపుచున్నాడనో
యరవిదానన గలిమిపుము మనో ♦ క్షాసిత సక్తీడలన్.

(6) పాట.

కట్టాకరినాత్మా గణియింపవె ధర్మాధర్మములన్ || కట్టా
ఎట్ట ఘోరకృత్యములైనన్ | సల్ప నొడిగిట్ట తివే
తుట్టతుదకు అదిచాలక ని | గొప్పబుద్ధినాపలుజూపఁ || కట్టా ||
మెట్టట్లో పతివధ్యకై మదిచించిలు చాలి చేతి కట్టి
బట్టవచ్చి యిటులనన్ గని బల్కవచ్చునా తగునా || కట్టా ||
చారు---ళీ! దుష్టచరిత్రుడా! ఎంత చెప్పినను నకు బుద్ధితేకి
న్నది. సోదరుని హింసించి, తద్భార్య సహహింసఁ దలంచిన దో;
వగు నిన్ను భగవంతుండింకను భూమిపై బ్రతుకఁ జేసినందులకుఁజి
తంపుచున్నాను. నే నెంత చెప్పినను నీబుద్ధిని మాటలించుకొనకుంటివి.
స్వకాంతపై నీచిత్తము జేర్చియున్నచో నీవీదూషణాబునకుఁ బాత్రుం
డవుగదా! నానాధుండు గతించెనుగదాయని నిర్భయూడవై యంతః
పురంబుఁ బ్రవేశించి యిట్టి కాటుకూతలఁ గూయుచుంటివా? నాకెవ్వ
రును దిక్కులేరని తలంపుచుంటివా. నీపాపబుద్ధియుఁ బరమేశ్వరుండు
వీక్షింపుచుండుటలేదా? నావివలుసలులేక యిట్లుగోరుటకు నీచిత్తమె
ట్లు సమ్మతించినది? పరాంగసారతి మాచరింపఁదలంచి రావణు
డు---కీచకుండు మొదలగువా రేమయిరో వినియుండలేదా?

దృష్ట—సీమగతిసీవతం సమా ! పురాణగాథలన్నియుఁ ద్రోక్ష్యేద
వేల ? అవియన్నియుఁ గన్నులతోఁ జూచినవారెవరు ?

చారు—ఛీ ! నురాత్మా ! (పండ్లు కొఱుకు దున్నది)

దృష్ట—

మ. ననువీక్షించిన మోముదిగ్విప్లుటమరి ♦ న్నామాటనాలించినన్
గనుబామ్మల్ ముడివేసి కన్నులమహో ♦ గ్రింబైనదృష్టిననున్
గిరుకన్ జూచుచుఁబండ్లు నొక్కుచుమదిన్ ♦ ఏక్షింపగానేల; య
ల్కనుడంగదె, పేతనైనయెడలన్ ♦ గంబాస్తువాంపవే.

(సమీపించుచున్నాడు)

చారు—దూరముగానుండుము. వినాశకాలంబునకు విపరీత
బుద్ధులుపుట్టుచుండును. సంతానవతివై, నీయగ్రిజనకు భార్యనై, నీకు
మాతృసమాననగు నన్ను గవయుటకు సాహసింపుచుంటివా ? నిబుద్ధి
కాలిపోను.

దృష్ట—ప్రేయసీ! నీదూషణవాక్యింబు లన్నియు నాకుభూష
ణంబులునుమీ. కోపించిన యువతులే తుదకుఁ గృపజూపుదురు. (స
మీపించి) సఖి! అలుకమాని నీకృపావర్షధారఁ బఱపుము. సంశయి
షకు. ఒకవేళ నే నీరహస్యము వెల్లడిఁ జేయుచునేమోయని శంకిం
నలదు. నే నెప్పుడును నట్లు చేయువాడనుగాను. రమ్మ. నాకోరిక.
దీర్పుము.

(మీదికిఁ బోవుచున్నాడు)

చారు—(కోపముతో)

మానిని.

ఎందులకిసతి నిందనుబొందఁగ ♦ నీక్రియ నన్నును గోరెదురా
పంద! పరాంగన లండఱు దల్లుల ♦ భంగిని గాంచవలెం గదరా
యెందఱుజచ్చిరి నీవలెగోరుచు ♦ నింతుల; భూమినినోతులువా
డెందమున్ దలపోయకొకింత క ♦ డిందిననుగవయన్ దలఁజే

ఛీ! ఛీ! దూరముగనుండుము. దగ్గిఱకురాకుము, ఇష్టములేనివారిని గూడుట యానలుమొగంబుల వేల్పునకైనను తరముగాదు.

(7) పాట.

ప॥ చారుమతీ నీనీతులు గీతులు చాలించి చూలించు॥ చారు॥

అ॥ ప॥ కూర్చుండై నాయెడ మాయంపు టీవోముగా తనబాణము విడుచున్.

సారెసారెకున్ । సరసమెరుగకన్ । గాగించుచుండె భరింప జాలన్.

నారీదయాళి నాభాధన్ తొలగించుము నికగుపుణ్యంబు॥

దుష్ట—అలివేణీమణీ! నేసంతవరకును నీమనస్సు కలుగునే మోయని శాంతముగాఁ బల్కుచుంటిని. మంచితనమూహించి యింత వరకునుఁ గాలహరణంబున కోర్చితివి. నీవు సంకోషపూర్వకంబుగా నాకోర్కె దీర్చినచో మంచిదే, లేనిచో—

గు. ధరణీరాజ్యము బోవనే; మణియుఁ గాం ♦ తారత్నముగూడ నీ గురువుల్ బంధులు సజ్జనంబులుగఁడున్ ♦ గోపిప నీ; మిత్రులు బరిహసంబానరింపనీ; తుదకు ద్రో ♦ వ్యంబంతయున్ బోవనీ తగుణీ రత్నమ నిన్నుఁగూడకెక నే ♦ దాళంగ లేనింతయున్.

బలవంతముగనైన నాకోరిక దీర్చుకొందుఁగాక, నాకు శ్రమకలుఁగఁజేయకుండ నీవేనమ్మించినచో నుభయులకును శ్రేయస్కరంబున, సంకోషకరంబునై యుండును. ఇందులో నీయభీష్టంబేదియో నత్వరముగఁ జెప్పుము.

చారు—ఛీ! కులపాంసనా! తులువా? బలవంతమున నమ్మఁ బట్టెదవా? నాదేహంబునఁ ప్రాణంబులున్నంతవరకును నీవట్టియకార్యము సేయజాలవు. ఒకవేళ బలవంతుండవై చేయజూచినను దానివలఁ బ్రయోజనములేదు. అయ్యది నాకుమరణంబుగూర్చునని తలంపును.

(కోపమున) ఛీ! దుష్టచరితా! ఇంక నీతో సంభాషింపరాదు.

(వెళ్ళిపోవును.)

మృష—తరుణీ! నీనెచ్చటికి బోయెదవ్ర? (హట్టకొనబోవును.)

చారు—(తనలో) హా! భగవంతా! వాసుదేవా! నాకెట్టి గవ్వంబులగూర్చితివి. నానాధునిజంపి, యాయుగ్మాస్థండునన్నుఁజేపట్టెదలంపుచున్నాడు. సీతతప్ప నాకుశరణం బెవ్వరును లేరు.

మ. అలనాశ్వాసమఁజూ సభాతలములో ♦ నాశాపదీదేవికి

శంఖవల విప్పెనువేళఁ గృష్ణ! యనుచున్ ♦ బద్మాక్షిపార్థింగింపగా

విలసవివృకటాక్ష వీక్షణమునన్ ♦ శిఖాస్థిమానంబుచున్

నిలువబెట్టితివీవు ముద్దగమునన్ ♦ మెచ్చున్ యశోదాసుతా.

తండ్రి! ఈమరాత్ముని బానిసగఁది నన్ను రక్షింపుము.

మృష—వెళ్ళిదానా! అట్లు రక్షించువారును, రక్షింపఁబడు వారును నీకాలంబున లేరు. (ఇచ్చిక యూరకుండి తనలో) నే నెంత గాఁ గోరినను, భయపెట్టినను నాయభీష్టాబు దీర్చుట కీయశివ సమస్త తింపకయున్నది. కాముక్కు. (నేనునుంచి విడిచి) ఓరీ! సేవకా! నిన్న బాలఘాతమనియొక్క కిగ కను రయాబునఁ గనకవర్మ తారల నిటకుఁ బోడ్కొనిరమ్మను మదీయాగఁగా బెలుపుము.

సేవ—చిత్తము. (వెళ్ళిపోవును.)

చారు—(తనలో) కనక సేవ తారలను నిటకురప్పించుచున్నాఁడు. వారియెడల నీతిదేవి కుకారకార్యంబు గావించునోగదా! (భగవంతు నుద్దేశించి) హా! వాసుదేవా! నీవే దిక్కని నమ్మియున్నాను.

(8) పాట.

ప॥ శ్రీరమేశా యోచిద్విలాసా కేశాక్షీరసాగరా శయనా॥ శ్రీర॥
అ॥ ప॥ కూర్చుండు దుష్టబుద్ధి నాముందు ఘోరంబుగ పఠింపఁజె.

మారంబాలోచించకనన్ గోరెను ఈ యేరితిన్ | యీత
రిన్ | బోచెదవో

దేవా గోవర్ధన మందరిగిరిధర దేవదేవి నా బోధవే | జ్ఞా
పతిన్ | యిపుడారీతిన్ | గాముగ్ధ యీకూర్పున్ | బాధ
నునన్ | తొలగించి రక్షిమి |

దక్ష—రిమణి! ఇప్పుటికి నీ సర్వమును ముగించుకొనువా
చారు—పాపీ! అప్పుడెప్పుడు వచ్చుము.

దక్ష—అట్లనా! మీరు దూరముననుండి బాది తీరెదను.

[కొంతప్పుడు తానెవ్వరేము.]

కనక— }
తార— } (తల్లిజూచి సమస్కరించుచున్నాడు)

చారు—వత్సలారా! మిమ్ముల పోషించిన నాకు మిగుల శోకం
బుగలుగుచున్నది.

శే. గీ. నలయు కోర్కెలదీర్చి జే ♦ వములకంటె

నెక్కుడుగఁజూచు మీతొడ్డి ♦ యేగినాడు

పృథ్విశాసి శోకమునుగూర్చి; ♦ పిశ్చవిహీను

లైన మిమ్ముల నేనెల్ల ♦ లరయఁగలకొ.

తండ్రిలేని బిడ్డలారా! మీయవస్థకు నేనేమి పగతును.

దక్ష—(చారుమహిమజూచి) తండ్రిలేని బిడ్డలారా! నీవిషయము
నీవు చింతింపవలదు. నీనాథులను నిన్నును, మీని నెట్లరిసి రక్షించెనో
యట్లే నేనుగూడ జేయఁగలవాఁడ నమ్ముము.

ను. తరుణాంభోజదళయతాక్షివినుమా ♦ తద్వంబు నాపల్కులన్

జరకాలార్జిత రాజ్యవైభవ ధన ♦ శ్రీతల్ల నీపుత్రుఁడే

పరిపాలింపఁగ నీవెమాచెదను; నా ♦ వాక్యంబుఁ బాటించి న

త్కరుణన్ నాదగ్గకోర్కెదీర్చు గదవే ♦ తక్షశిరోరత్నమా.

చారు—(కోపముతో) బేరా ! తులువా ! నీసాహసంబును మానవ్రగదా ! నిన్ను కాష్టంబుపైఁజెట్టి దహించునంతవరకును గూడ నీబుద్ధి మాననశ్లన్నావు.

దుష్ట—నివిష్పశు నాకు సాపూర్ణంబుగ జిక్కియున్నావు. ఇంకనీమెదుల కరుగగలవు. (పట్టుకొనబోవును)

చారు—అంత సాహసంబు వలదు. కొన్నాళ్ళు బ్రతుకదలం చితివేని బుద్ధి మఱిించుకొనుము.

కనక—(దుష్టబుద్ధినిఁ జూచి) వినతండ్రి!

తే. గీ. ఎవ్వరిని నెన్నఁడైనను ♦ నొవ్వనాడి

యెఱుంగనట్టి మాయమ్మపై ♦ నింతకినుక

బూన నేటికిఁ జెప్పమీ ♦ పూర్ణకృపను

జింతఁ బోగొట్టుమీ ♦ మాకు స్వాంతమందు.

తార—భాబయ్యా! నీవు మాకుఁ దండ్రితో సమానుడవు. మాలమ్మచు కోపించెదవేల?

దుష్ట—(తనలో) చారుమతి నాకోర్కెఁదీర్చుటకంగీకరింపకు. అయినను చివలకు జాపనుకించినచో సమ్మతించునేమో చూచెదఁ గాక. అప్పటికిని సమ్మతించియెడల వీరినాదఱిని జూపివేసెదఁగాక. కనకవర్మ తార లూపుట యెప్పుడైనా నాక సాయమే. (ప్రకాశము గా కనకవర్మకుఁజూచి) కనకవర్మా! నిన్నును మీఁచెల్లెలను నిటకు రప్పించిన కారణం బేమియో తెలియునా?

కనక—తెలియదు.

దుష్ట—తెలియదా ! నేను చెప్పెదను. మిమ్ముల నిరువురను జంపుటకే. అంతకుఁజే మఱియొక కార్యమేమియును లేదు. (భక్తము యొనఁచుండి ఓయుచున్నాడు)

చారు—(తనలో) అక్కటా! మహాత్ముల కెంత సాహసమున కొడిగట్టుచున్నాడు (దుష్టబుద్ధినిజూచి) ఓరి! ఇదివర కెన్నియో మహా పాపకార్యము లాచరించితివి. ఇప్పుడిది పసికూనల జంతువు కేలసాహసించెదవు? దీనివలన నివందు బ్రయోజనము జేసియున్నది.

దుష్ట—ప్రయోజన ముండుటచేతనే (కనకవస్త్రము జూచి) రమ్మ; కనకవస్త్రా! ముందుగా నాభిష్టమునకు సిగ్గులు చెప్పెద— (ఖడ్గము నెత్తుచున్నాడు)

తార—పినతొడ్రో! మా యన్నను జూప వలదు. నన్ను జంపుము.

దుష్ట—తరువాత నిన్ను (కనకశీరునిపై కత్తి నెత్తుచు)

చారు—(దుష్టబుద్ధినిజూచి) దుష్టశీలా! దుర్మార్గవృత్తియందు నన్ను బ్రవేశింపెట్టటకై ప్రయత్నింప నేనందుల కియ్యకొనకుండుట జూచి, యీదెఱంగుఁగూహించితివా?

తే. గీ. బాలు, నుకుమారు, నుగుణాల † వాలు ధివి

శాలు, శశిబింబవదను, లే † శంబుకగుణ

బూనకి ఖరాసిచేత ని † పుడమిఁగూల్పు

జేతులెల్ల యిది సీకునో † చెనటి వినుము.

‘పార్థ నాపూర్వకంబగు నావ్యాకంబు లాలించి ఓరివి విడువుము.

(9) బేహుగురాగము ఎకతాళిమ.

ప॥ పితృసమానుడవు మరి పినతండ్రివిగద ప్రేయమున ముముగను
మయ్యా దయలో మా నుడివినుమయ్యా

ల॥ ప॥ పుత్రులమగుదుము శత్రులభంగి పూర్ణాగ్రహమున గాం
నక॥ పితృ॥

ఏతుహీనులుగా మముచేసితి వదిచాలదా పుత్రుడుఁబు
నాజననికి మరల సంకల్పింపనెంచితివా॥ పితృ॥

ధాత్రీనెంచైన నిన్నుదలంచి । అన్నపుత్రిలను అన్యాయంబుగ
వధించిన నచే॥ పిత్తు॥

తార—పితృసమానా ! నియన్నభిక్షలమగు మమ్ము గాపాడు
టకు మారుగా నీఖిష్కంబునకు బలినొసంగఁదలంచితివా! మేము నీకేమి
యపకారము చేసియుంటిమి. మహాకౌగిల్యముబూని మాతండ్రిని వధి
యించి మమ్ము బిత్సవిహీనులుగా జేసితివి. అది చాలదా!

కనక—అయ్యా! మాతల్లికిదివలయు భర్తృశోకంబుగూర్చితివి.
ఇంక బుత్తశోకంబుగూడఁ గూర్చఁదలంచితివా?

తే. గీ. పతివియోగమునకె తన ♦ భావమందు
మిగులఁగుచుచు గృహియించి ♦ నెగుచున్న
జనని యియ్యదికూడ దా ♦ గనయేచి
బ్రతుకగలదె డహమున జి ♦ పములదాల్చి.

(కొడుకు నుద్దేశించి)

చారు—హా! కొడుకా! నీకెంతయవస్థ తటస్థించినదిరా.

తే. గీ. అన్నకొడుకంచు నొక్కతాత ♦ యరయకుండ
జన్మమున గృహనితయు ♦ జేర్చుకూడ
కలుగుగత్తికి గలరాబు ♦ నలుకఁబోవ
గాంచుచుంటిని కన్నులు ♦ కాలిపోవ.

దుష్టబుద్ధి! నామాటలవినుచు. ఏరుగాని నేనుగాని నీకేవిధమయిన
దోహంబును జేసియుండలేను. అట్టయెడల వీనినేల యకారణంబుగఁ
జంపనెంచెదవు?

తార—(దుష్టబుద్ధినిజూచి) తండ్రి!

చం. కనులనీరుగాఱఁ గొడు ♦ కా! కొడుకా! యని యేడ్చుచున్నమా
జననినిజూచియైన మము ♦ సత్కృపఁబోవుము వేడుదాన; నీ

మహామనశాంతి జెందమింక ♦ మానసమును భయంబునోచెడిక
ఘనయాసినిగహస్తమునక ♦ గాంచిన యంత నె మాగు వెలయున్.

దుష్ట—ఇట్టి దీనాలాపంబులకు చుట్టబుద్ధి చిత్తాబుకలుగ గు.
(కనకవర్మను జంపబోవును.)

చారు—

మ. తనయుడొక్కఁడువంశమున్ నిలువఁగా ♦ ధాతృస్థలిఁ గాంచితిన్
ఘనకారుణ్య కటాక్షపక్షుని సుధా ♦ కిల్లలపాథోధుని
గని రక్షింపకయిల్లు దిగుటకున్ ♦ గాక్షిం చెదేలా! మనఁ
బుననూహింపుమొకింతమంచితనమున్ ♦ బుద్ధ్యాబు సో బైడిన్.

దుష్ట—నీవా! నాకోరిక నంగీకరింపకయుంటివి. మహాయు నీక
నక పాలుడు బ్రతికియిన్నచో ముందెప్పుడయిన రాజ్యవిషయమైకొల్లల
ముప్పులును. తనతండ్రి రాజ్యమని నాపై నెప్పుడయినఁ గత్తిగట్టాట్టకై
తలంచును.

చారు—హరిహరీ! ఇందులకా నీవీపసికూనల జంపదలంచికో
సోదరునిజంపి సమస్త రాజ్యమును నియోగమున జేసికొంటివి. మఁ
గ్రిలందఱును నికధీనులైయుండిరి. ఇంక నీతఁడు నిన్నేమిసేయును. పసి
ని కంతసాహసముగూడఁ గలుగునా? పోనిమ్ము. సకల్భయనుమాన
మున్నచో మేమందఱును నెందేసి యీపురుషుని విడిచిపోయెదము.

దుష్ట—(సమీపించి) పేయనీ! నాయభీష్టము నీప్రదర్శితవని
యిదియంతయు నవసరములేదు. రమ్ము. నాయభీష్టగుబుద్ధి పుత్రపు
త్రికలతో సౌఖ్యముననుండుము. (మిదికిఁబోవును.)

చారు—దుష్టీలా! ఏమిరా! నీపొగుబోసుతనము. (తప్పిం
చుకొనుచున్నది.)

దుష్ట—ఇంక నీవెన్ని చెప్పినను నిన్ను విడచువాఁడనుగాను.
(మరల పైకిఁ బోవుచున్నాడు.)

చారు—జౌరా! పలుగాకీ! ఎంత చెప్పినను వినకుంటివి. (పరుగెత్తును.)

దుష్ట—ఎక్కడికిబోగలవు? (వెన్నంటి పరుగెత్తును.)

చారు—(భర్తనుద్దేశించి) హా! పోజేశ్వరా! నీవున్నచో నాకీయిక్కట్లు రావుకదా. దుర్మార్గుడైన నీసోదరుండు నాకు మానహాని గలుగఁజేయుఁ జూచుచున్నాడు.

తార—(దుష్టబుద్ధినిజూచి) పినతండ్రి! మాయవ్యుడేల యీ రీతి బాధపెట్టెదవు? రక్షింపుము.

దుష్ట—(మరల చారుమతిని వెంటఁచును.)

చారు—(పరుగెత్తుచు) హా! నాకింక నెవ్వరును నష్టపడువారు లేరు. భాగీరథిమహాదేవియే శరణంబగుఁగాక (పరుగెత్తుకొని పోవుచున్నది.)

దుష్ట—(పరుగెత్తి నిష్క్రమించి వెంటనే ప్రవేశించి తనలో మహాసాహసముబూని యీనాతి నాకందక నదించఁడబోయిన కానిమ్ము. ఇదియుమేలే. (ప్రక్కందిరిగిచూచి ప్రకాశముగా) ఓలే బాలఘాతకా!

బాల—(ప్రవేశించి) దేవా! ఏమిసెలవు?

దుష్ట—నీవు కూర్చుండునుగలిసి కనకనర్మతారలను నరణ్యంబు నకుఁ గొనిపోయి వధించిరండు. పొండు.

కనక—తండ్రి! నీవు.....

దుష్ట—మాటలాడవద్ద (నిష్క్రమించును.)

బాల—(కనకనర్మనుజూచి) రండు.

(కనక సేనతారలను దోడ్కొనిపోవును.)



రంగము:—చదవకము.

[ప్ర]వేశము:—పల్లెనాయకుడు, వీరరాజు, లచ్చిగాడు
మొదలగు పల్లెవాండ్లు.]

(10) పాట. ఫగలరాము నితాళము.

ప|| రారాపోదామ న పలనేగాని రారా||

అ|| ప|| యింగిగా పేరిగా లచ్చిగా పంపిం గారా

యింగిజువర్ససూడు యున్నన బాగుది గారా

ఓరోరి సూడు సూడు మజ్జేసిదాచన! రారా

మారెమ్మల్లకి మనమీదనయక్కలే యింగి పుట్టుపట్టించె
కరుణించి! రారా

పల్లె—ఓరియారా ! ఇయ్యాలలో నూ బాగుందిరా !
సూడు. మజ్జేసింది. వలలకు శాపలు బాగా సిక్కితాయి.

వీర—ఏంపట్టినా మనలచ్చిగాడ్డొలి. ఈడు నిన్న మచి
పుకుండానే శాపలట్టడానికివచ్చి రాత్రింతా యిక్కడూ మావో
శాపలట్టి రాజుగారిదగ్గరకు తీస్కెల్లితే రోగు వరాలిచ్చారట.

లచ్చి—నాకొచ్చినని యెదుకేకుస్తావు? నువ్వెక్కడా ను
య్యాల పట్టరాదూ?

వీర—సూస్కిశమామా ! ఇయ్యాల నీను చచ్చి మొదల
ట తివి బట్టుకొంటారో!

పల్లె—ఒకే. ఏంటేన్. ఈ వల్లమాలిన మాటలు. వలల
వన్నంజోన్.

(అందఱును వలలు నదిగోనికి విసరుచున్నారు.)

పల్లె—మాసెడ్ల సలేత్తుందిరా. మచమాతా! లిసి యేదన్నా
పాడుకొంటే యీ ఫలిబాధపోతుందిరా. వీరా! కానియ్యరా !

వీర—చక్కానిచిన్నాది-యేలేలో-నాపైని మక్కువగొన్నదీ-
యేలేలో! (అందఱురుగలిసి) చక్కానిసిన్నాది యేలేలో - నాపైని
మక్కువగొన్నదీ - యేలేలో !

పల్లె—మాదొడ్డిపాట తీశావురా, తీయండి. వలలు. సూస్తారే.
(నీటిలోవేసిన వలలుతీసి) వీరా! లచ్చిగా! సూడరా! నాతమామా!
నావలలోకి యెక్కటి నీటివాలుగ పడ్డదో. (వీరకు వలజూచి) నీవల
లోకి అన్ని సిన్నసిన్న శేపలే. ఏదిరా! లచ్చిగానీవల. చికుసూడా
మంచి పెగిలారు పడదిరా. అద్భుతం. నాశాప బుట్టపట్టగోన్. ఒక్క
నవుచి దొబ్బెయ్యమూ. టామెత్తుపెత్తునోన్. (అట్లు నేయుచు
న్నాడు.)

వీర—మల్ల! సూస్తు కూసుడామెనుకు. వలలునుల్లియె
య్యకి.

వీర—లచ్చి—(వలలు వదిలి వేయుచున్నాడు.)

[పల్లవానున్న స్థలమునకించుక దూరముగా
చాగునుతి ప్రవేశించుచున్నది.]

చాగు—(తనలో) అక్కటా! ఆరుర్మాగంబుగు దుష్టబుద్ధి
యొకటి సాహసకార్యము నేనుచేదలంచినాను. ఇత్త గతించినను,
పుత్తుని పుల్కించు సూచకమును శోకించు మిగిలియున్న నన్నాను
ర్మాగంబునకు పాలుజేయవలెను. ఇక నేను జీవించినందు
వలన బయోజనమున్నది. నేనువానికంటె గుపడితి ననిబలవంతము
నైన వానియభీష్టము దీర్చుకొనక మానరాదు. కుర్మశ మంచుటకన్న
మరణమే మంచిదికదా.

శే. గీ. ఇత్త తమ్మునిచేతఁ గూ ధిల్పంగబడియె
విజ్జలమజంప వనికీలు ధి పింపనెంచె

నవ్వడికిగాక పాణిముల్ + నేనుమేన
దాల్చి జీవించుదానను + భరణియూను.

(కనకవర్మను నుద్దేశించి) తాటి! కనకవర్మా!

సీ. నిను బాణిములకింత + చుక్కలజూచు
చూడి యెప్పుడుగాను + కూడ; నీకు

భంజే, తనకును ను + భుజించు నూహించి

చిమవివాహము + జేసి; యుక్తి

నయనువచ్చినయెడ + భర్తగానైననూ భ

జుల నూహించి + నూహించు

సకలసామంతరా + భ్యసామంతులె

దాని నొడవలకు + దానియెప్పు

తే. సీ. భవ్య భవతీయాజనకూచు + పాణిములు

వీడి సుఖోకముచున్నట్టి + వెసినాను

తాటి! చిచ్చిరిక నెవ్వరీ + భరణియూను

గాననా దుష్టబుద్ధి + దుష్టబుద్ధులు.

(తారనుదేశించి) కుమారీ! తారా!

తా. భవ్యశ్లోబులుచెరువారక నికర + తవ్వ శిరోరత్నము.

గన్యావాసము జేసినెక్కడ వే + గన్యావారలూబును గా

జన్మలో మోదమునందఁగాననుచును + స్వాతింబునందెంచు నా

జన్మశ్రీనిధి నీకుతొప్పి యకంక + స్వర్ణము జేరెనదా.

ఇంక నేనును దుష్టబుద్ధి కారణమున బాణిములు జాయచుటైన.

ఇప్పుడు తల్లిదండ్రులులేని మిమ్మెవ్వరు రక్షింతురు? (దుష్టబుద్ధిని

దలంచుకొని) అక్కటా! దుష్టబుద్ధి మనయెడల నాతక్రియలు

నూహించినాడు.

సీ. అన్నబిడ్డలటంచు ♦ నాత్మలోపల వెంచ
 డాయగా తన్నెంతో ♦ డాసివేడ
 పసిపాపలనుజంపఁ ♦ బాపమంచునుదోచ
 డాయగాఁ డాయగాఁ ♦ దలచెగాని
 పరకాంతలనుగోర ♦ బాప బూచును
 దోచదే దుర్బుష్ట ♦ యోచెగాని
 తన దుష్ట కార్యములో ♦ జనులెల్ల సగునరం
 చొచ్చడే దర్శించు ♦ మించెగాని
 షే. గీ. కట్ట! నుష్టబుద్ధిగాఁది ♦ కలుషమంచు
 సాహసముబూని వచ్చియుచు ♦ సజ్జనములు
 పేరే! సగరింబుసంచున! ♦ లేకయుండి
 రా మిగుల క్రూరుడొంచును ♦ రాగుగాని.

(ఇంచుక యూరికుండి) ఇప్పుడు నేనింతగా విలపించిచగునలన బ్ర
 యోజనం శేమియున్నది. ఇక నేనీభాగీరథింబడి నుఖించుటయే మీరు;
 కాని నావార నాబిడ్డల కెవ్వరెఱింగితురు. కానిమ్ము! ఈ గంగాభ
 వానినే వేసుకొందుగాక. (నదిజూచి.)

సీ. నుష్టబుద్ధియనెను ♦ నుర్భాగుకతమునఁ
 దమతొడ్డినిగూసి ♦ తనరుచున్న
 పసికూననునీడి ♦ భయమొది మానఁ
 నికి; నిష్ఠ నినుజేరి ♦ నేనుగూడ
 తనువుగోల్పవఁగాఁ ♦ దలచియుంటిని; నిట
 ననుజూచి హోరుహో ♦ రనుచునేడ్చు
 నీవుగాకనుదిక్కు ♦ యెవ్వారలునులేరు
 పుణ్యవాహినివంచు ♦ బాలుపుమీఱు

తే. గీ. సకల జనములపొగడ య ధి నంబులెన్న
నిన్ను వినుతింపఁ గలమాతె ధి నిఖిలభావ
జనని ; నామొలనాలించి ధి స్వస్థము
నాదులెల్ల రే గి పు ధి నా చాచి
కిరుగన్ కీ తదాద్వైతం ధి గాభివాసి.

పల్లె—ఒకే! పుగడూ! అదాటోయి. అటుసూచి, యెవరో
అమ్మోరు నదియి కొచ్చునో. తానమాపడనికీ కామోసు.

వీర—ఒరయితే నుచక్కానె చుక్కే. మనశాపలగోలనునం
సూస్కుదాము. వలదడేస్. యేరా! అచ్చిగా మొగిలానూత్తపు.
యియ్యాల కెల్లాగియనా ఓవరాసామ్ము కొంకరి కీ కల్లకపోతే నీపె
ల్లాము చూకి మాచెప్పది. నీపురుచ్చుకొని అదేబాదలు మొదలెత్తది.

చారు—అలోచనయేల. వెళ్ళదానని నావార్తి బిల్లకెటిం
గింపుమని యిచ్చంగు మేమకొనుచున్నాని గాసి, గుట్టబుద్ధి నాబిడ్డ
లను మాత్రము బ్రగి కనిచ్చునా? ఇక చేరుదులెడదను. (చేతులు
తోడించుకొని.)

తే. గీ. అమ్మరో! ముంగజన్మకు ధి చననాకు
జన్మసేచుండ సతిగాగిం ధి జేయుమన్న
నన్ను నీలోగలల్పుకొ ధి నగదమ్మ
కరుణబూనుచు కవిజ గిం ధి గాభివాసి.

(నదిలోఁ బడును.)

పల్లె—ఒకేయి! కొంపమునిగిందిరోయి. అదాటో! అరుకొ
న్నాను, ఆ యమ్మోరు నదిలోబడ్డది. మీరిక్కడ పుంకుండి. నావల
వేసి ఆయమ్మను తీస్తాను. (వలదీసుకొని పరుగెత్తి చారుమతిపడిన
స్థలమునవేసి యామెను దీయుచున్నాడు.)

చారు—(తనలో) చావలెననుకొన్నను కావలసినప్పుడది

రాదని వెదలు చెప్పుదరు. అయ్యది నేడు నిజమైనది. ఈపల్లెవాడు నచ్చేటికి దీసనాడు. ఇకను భావతుడు నన్నెట్టిప్రముల పాలుజేయఁబలంబు యుగ్గనర్పినాఁడు.

పల్ల—(చారుమూనిజూచి) అమ్మోరూ! మీరు ఆయాసం తీర్చుకొండి. భయంలేదు. సూస్తుండగానే యిందులూ పడ్డావెందుకు బతకడానికి యెట్టులేదంటుమ్మా.

చారు—నామనా! నవెవ్వరూ. దేహముపైరోసి నదియందు బడిన నన్ను బ్రదికినతివేల?

పల్ల—సత్తూవుంటే నూచి పురుకొంటానా! ఎంతమాట. (ఇరుకయూరకుండు) నిసంగ తోట? యిరులో యెందుకుపడ్డావంటి కుంతసెప్పు.

చారు—ఓక్కాదాతా! పల్లనాయకా! నేను పొండ్లదేశపు రాజైన చిత్రసేనుని బావయ్య. నానాథుని కలినితమ్ముడగు దుష్టబుద్ధి వధించి నన్ను గిట్టములపాలుసేయఁదలంప, నేను బ్రదుకుపైరోసి యీనదిం బ్రవేశించితిని. నాబట్టలనుగూడ దుష్టబుద్ధి వధింప నెంచి నాడు.

పల్ల—(తనలో) ఇది మానక్కసనన్నది. దీన్నిసూస్తే నాకు యికారం పుట్టినట్లు. నేను పెల్లగాదిన్ని మోపిపేసి యింటకి తిన్నానియెల్ల పెండ్ల జాలి. (ప్రకాశముగా) పిల్లనిచ్చినభయం లేదు. నాదగ్గర వుండొచ్చును. నీబిడ్డలసంగతి కనుక్కొంటానులే. శాపలమ్మ జాన్ని మోహొల్ల నుట్టబుద్ధిదగ్గిఱకు యెల్తుంటానులే. దా. మాయింటికిపోదాము. మాయింటి దాస్యమల్ల నిన్ను సూస్తుంటాను భయంవద్దు. (చారుమతితో నిష్క్రమించును.)

ఇది ద్వితీయాంకము.



సంగీతకనకతార.

తృతీయః పాదము.

సంగీతము.

సంగీతము:—అరణ్యము.

(II) చాట. పింగి ముహురిరాము . పరితాళము.

ప|| పాదము నుయ్యారము మాకీది శిశువు

అ|| ప|| నూరదప్రప్య మొనరి గలము ముఖాశితల మాయ
మయ్యె|| పాద||

అనురక్తమును సుష్టుంగి అయ్యె మమ్మి మహారణ్యమున
దా వధిపదం బుపెను భటులకు|| పాద||

[ప్ర]వేశము—కినక సేరును—తార—కూరును—గొలముతమును
కూరు—(కినక శేనతారలచూచి) త్వరగా వశచాడి! పూరి
కేదిక్కులుమాస్తా శేమికి? మీరొకనే మాకు శెల్లవారిపోయేట
ట్లున్నది.

కినక—కూరునూ! నీవల్లు కి నీరును నీ శేనునగలం?
తే. గీ. బాలసుకుమారి గుణజాల ♦ బేల, యెప్పుడు

కంటకావృతమైనట్టి ♦ కాననమున

నడచి యెరుగదుకాన ♦ కడుగులిప్పుడు

తడబడుచు నున్నవొకింత ♦ తాగుడయ్యె.

అధికారము వచ్చినదికదాయని యిదియంతయు మానైన వినియో
గింప దలవకుండు. కాలమెప్పుడును కొక్కటియైన చుడకు.

బాల—అయ్యో! ఈమాటల కోనేమిపనియన్నది? మేము చేయవలసిన పనియేదో త్వరగా జేసికొని మాదారిని మేము పోషెదము.

తార—(తొందర) వీని నోటియూడి యీమాట వెలువడఁగానే నాకేదగుబాటయు గాన కలెత్తుచున్నది.

తార—(తొందర) నాదీక్ష: బల్కలుకూడే మనము తూర్పులేనినాటను, మనలకు నామకొరుమఁ దల్లమై జీవించి యుండునది తలచుచున్నట్లు కౌణాబున నమ్మముగూడ మనల కెడగొని పోణములఁబ్రకటన నెచ్చతోకోపమునది. ఆహ! మన బ్రతుకెల్లగా మానెను.

తార—అయ్యో! ఇప్పుడు మనము విచారించినందువలన బ్రయోజనములేమున్నది?

శే. గీ. ఒక్కరిఁగూర్చి మదినివే ♦ నొకరుచింత

కొందెడి యనసరంబులే ♦ రుడజేసి

నాకుపించుకొని; తొడిగిను ♦ న్నాడి నమ్మ

నా శిరంగుననేను మ ♦ నల వధిప

నిలగునాథ గావించి ♦ వెలయుతన.

గావున నిప్పుట్లెంతి వలసిన పనియేమున్నది?

బాల—అవసరము! మనము గొమ్మస్తానము జేరుకొన్నాము. మిమ్ముల వధిచే కలరుదే. ఇక మీరు ముణాబునకు సంసిద్ధులై యుండును.

తార—అయ్యో! మమ్ములను జంపివేయుదురా! నన్ను జంపి మాయన్నరు విడువరు.

బాల—ఇద్దరిని జంపుమని ధృష్టబుద్ధి యాజ్ఞయై యున్నది?

తార—(కన్నీరు గార్చుచు) అయ్యలారా! మీరింత క్రూరు.

ముబూనడగదు. నాప్రాకృత మగ్గికరించి మమ్మును విడిచివేయును.
ఎచ్చటికైన బోయి బ్రతుకుదుము. మమ్ముల వేదకొందరు.

కన—కింకరులారా!

సీ. కన్నీరు మున్నీరు ♦ గాఢానందము

వేసవిన్నది ♦ సు ♦ జూహయ్య

తనప్రాణములనైన ♦ కన కాకలపియో

లుతులుకట్టాడు ♦ జూహయ్య

ఏపాపమెఱుంగెన ♦ యాపనశాల

ప్రాణములయ్య ♦ పాపముయ్య

కలకుంగత్తులజూచి ♦ కింకరుల యాతా

భయము ఎగిరినది ♦ కింకరులయ్య

తే. గీ. సకల భూవక్రమేలిన ♦ తృప్తిగలగు

శ్రేతజనామరభూబంధు ♦ చిత్తస్థిని

డగని బిడ్డలమయ్య మీ ♦ మాత్తెనా

వేసుచుంటిమి దయగీత ♦ జూహయ్య.

బాల—గాలుండ ! మమ్ము బ్రహ్మమాత్రేకులైనా మమ్ము
న్నది? దష్టబుద్ధి సగిలి మీరెఱిగియున్నదేకదా! మమ్ములయ్య.

తార—కింకరులారా! ఇంకను మీరు మీ మాతృభాగం
సోపణంబున దండనారు. ఈ దుర్మార్గుడుగు కష్టబుద్ధి మాతృభాగం
వధించి యారాజ్యము వశముజేసికొనియుగి, మాయెవల స్థితి ను
ణకృత్యము జేయ సాహించినాడు. పసచా హామగు మేమూరల
యెడల నెట్టివిధమున దోహంబును జేయ డిలేకు. మమ్ము
లను జువినందవలన మీకువచ్చు లాభమేమియును లేకు మమ్ము
రాజ గర్భిణుల నన్నింటిని మేనితెరచుచు మాతృభాగం భ్రష్టమై
యన్న మమ్ముల వేడుకొనుచున్నందున లక్షనము క్షమించులది మమ్ము

జంపక విడిచిపెట్టుడు. దీనివలన మీకెంతయు బుద్ధ్యము కలుగును.

కన—బాలఘాతగా! మా పాణింబులు మీరు తీయుదురని మేమెంతమాత్రమును విచారించము. కాని యకారముగా మేము వధియింప బడుచుంటిమిక దాయని చింతింపుచున్నాము. ఈదేహంబు లెప్పుడయినను బోవలసినదే. ఇదివఱకే మీరనేక హత్యలుగావించి పాపంబుగట్టుకొనియుంటిరి. ఇట్టి మహాపాపకార్యంబు లాచరించుటగజేసి మీరు నరకకూపంబున బడంగలరు. అదియుంగాక మీరును బిడ్డలుగన్న వారలై కావున యాపాత్యల్యమెట్టిదో మీరును నరిగియుంటిరి. మీరు మాయందుఁ గృపాంతరింగులై యిప్పట్లు మమ్ము విడువ్రుడు. మేమెట కేసిపోయి జీవించెదము. మాచే సంతగా బ్రతి మాల్పించుకొనుటకు మీకెంత శ్రేయస్కరముగాను. మీరును యోచించి చూడుడు.

కూర్మ—(బాలఘాతకునిజూచి) ఒరే! బాలఘాతకా! ఇది వఱ కనేక హత్యలు జేసినానుగాని పీచ్చును జంపడానికి చేతులు రాకుండా నున్నాయిరా—ఏమయితే అయిందికాని వదిలివేశాదాము

గాల—అవునురా. ఇప్పుడు మనము దుష్టబుద్ధిదగ్గరకు వెళ్ళి యేమని చెప్పదాము?

కూర్మ—చంపేశామని చెప్పదాము. ఏంచేస్తాఁ జేమిటి. ఇందులో మించిపోయినదేమున్నది.

బాల—నాకు అల్లాగేతోస్తూవుంది. (కనకవర్మతారలనుజూచి) మీరీవేపుకు యెప్పుడూ రాకుండా యెక్కడో పొట్టపోసుకొండి.

కనక—తలారులారా! మీకు శుభంబులు గలుగుఁగాకి. భగవంతుండు మాయందుండి మమ్మురక్షించుటకు ముచిబుద్ధి ప్రసాదించి సందులకు మాకు మిగుల సంతోషముకలుగుచున్నది.

బాల—ఇది మేము పోయినప్పుడు. రా.రా. (కూర్చునిపోనిష్క్రమించును.)

తారి—'న్నయ్యా'! అభిగతమైన కృపనలన విరిచెట్లు నుండి యివలెలకుంటి బ్రదికిపోయి.

కనక—చెల్లలా!

తే. గీ. కూర్చున్న పోవలె మది ♦ కొంత సేవి
కృప మునుమున నున్నది ♦ జాలుచున్నది
శిల్పములగుల్ప విడిచిపెట్టి ♦ పోవుచున్నది
ముక్తి న పొందె నెట్లు ♦ వినియ్యగాదె.

అది యట్లుండొచ్చు. మునున విచ యన్న కన, బ్రయాజన మేమున్నది?

తే. గీ. తెంజి వసుగుడుగాబడి ♦ నల్ల పట్ట
బుట్టములమున నున్నది ♦ పోయెను, యెందు
గొంగరాచివరు నునల ♦ గాతురిగి
బ్రదికియున్నది కేలు ♦ భంగముగలదు.

తారి—'న్నయ్యా': భిగవతుని కృపయున్నది నమ్మను మనము చూడకయున్నమా?

కనక—సాధరీ! దీనిని గూర్చి నేము విచింతింపగలను?

తే. గీ. మఱిదిగలననించునట్లు ♦ రాగ్యముగ
శాగములైన రోయుచు ♦ నానియ్యు
మునగి ముగియబుచ్చునో! ♦ పుష్పముల
కన్యముల నందచున్నదో ♦ కాకరాదు.

ఏదియెల్ల నుచు నామ విచియున్నది నెప్పుడును సాగము చూడగలము. (ఇంచుక యుగకుడి పట్టాని! ఇంచుక వశిగా

నమస్కరము. మనము సాధ్యసమయముగాకుండ వేదేని పురము జేరు
కొనవలసి యున్నది.

తార—(నడచుచు) అబ్బా!

(12) పాట. హే! కన్నడరాగము .. నూపకతాళము.

ప|| కట్ట మాక్కి బెట్టా బెట్టా హతవిగ్గి.

అ|| ప|| పుట్టెలిమీ చక్కనివట్టి పుట్టెల్లను తుదక్కొక్కడవిగ్గి కష్టములకొ
బడుచుండకొ విగ్గినానెక్కొ కష్టా

కనక—తల్లీ! ఏమిది. ముట్లగుచ్చుకొ నెనాయేమి? అకటా?
ఏంతయవ్వవచ్చినది. చొక్కాబునం నే ముట్ల ముక్కట్లు పడుచుంటి
వికదా?

తే. గీ. చెల్లెలా! రత్నపాధవి ♦ శ్రేణులకక్క-

మిగుల నాయాసమందు ♦ వెగడునీపు

కంటకావృత్తిచూ డెవార ♦ కానకమున

నడుచుచుంటివి యడుగులు ♦ తడబడంగి.

తే. గీ. ఎండవేడిమి యభిరక్తు ♦ యుసగుకతన

జన్మబులు గగ్గెన్మ నె శిరీ ♦ కమ్మనందు

పూర్ణచంద్రాబోలు నె మోముమిగుల

వాడియుండెను నిశయందు ♦ బద్ధమట్లు.

నిన్నుజూచిన నాకు మిగుల చింతకలుగుచున్నది. ఎన్నడును నెండ
కన్నను వానకన్న నెటుంగని నపేక్షారాగ్యమున నిట్లాయాసమందు
చుంటివికదా. ఎంతవానిగర్భంబున జన్మించిన నేమి? (భగవంతుని
నుద్దేశించి.)

మ. చతురంభోధిపతీతముక్తికమహీ ♦ సామ్రాజ్యభారంబునా

యతబాహుయుగళంబునన్ నిలిపిరా ♦ జోధులు సేవింపగా

క్షీతిబాలించెను చిత్రసేన నృపతి ♦ శ్రేష్ఠులు తానేగని

తృతిమాస్కంబెఱుగిరిజాలనుకటా ♦ తొడిగి! మముఁబోవవే.
పరమేశ్వరా! మహారాజునృపాలునియొక మాక్లిసానిటబలులు
గూర్పుటకు మేము నీయెడల నేమియ్యనా చొరలించితిమి?

తార—అన్నయ్యా! తాలూకాయు నూరిపోయితి. ఎక్కడ
డభగవంతుడు? ఎక్కడోనిము? అన్నతొబుబానుచారును బరాంగ
నల గవయకొనువారును, భగవద్విక్రమియ్యారును, చెడినట్ల గొంతు
కలగోయువారును, సుభాబుల బడయుచుండిరి.

తే. గీ. సత్య పురుగుంట పొరువ ♦ స్వమత హరి

వాభిమాన శౌర్యగుణము ♦ లగ్నిబడియె.

దైవభక్తియు నశియునె ♦ ధర్మమెదు

నిలచియుండును ధరనేపై ♦ లలితచరిత్ర.

ధర్మాబు నశించుచున్నప్పుడు భగవంతుడు మాత్రముగనా?

కనక—ఇతరులు ముఁగుతగా విచారించినను విధాతవాసి
నవాత తప్పును. ఇదిను మన మెన్నికడగొల్ల గుఱవనలసియున్నదో
యని మాత్రము నేను చింతింపుచుంటిని. నామాటకేమి? సుకుమార
శరీరపు. ఎన్నడును గృహంబువిడిచిన దానవుకావు.

తే. గీ. అదిగో కనజాలఁ గనజాల ♦ నతినమిన్న

పద్మవత్రి భగవైస ♦ పాదయగి

యరుణకాంతిని వహించె ♦ వడవియంగు

గతినపాపాణములుసోకి ♦ కార్ణికుతన.

తార—అగ్గిజ! నీవు సన్నుఁగూర్చి చింతింపవలదు. నామూల
మున నీవు కష్టపడుచుంటివి.

కనక—అమ్మా! నీవెప్పుడును నట్లు తలఁపవలదు. ఎంతమాట
యంటివి. నీవు నాకు భారమా?

శే. గీ. అవనినున్నచో నన్నునె ♦ న్నాళ్ళకైన

గాంచి, యాకెట్లోఁగూడి ను ♦ భాచంగలము

గాకయున్న నిరువురమే ♦ కముగ గంగి

యంగనబడి పాఁగొమ్మూఁ బా ♦ యంగలము.

తార—(ఇరుకనడచి) 'గగి'గా! ఈ పాఁగితమున నచ్చటను జలంబులు లేవుగానియు, దాహముగనుచున్నది.

కవక—కనుమూపుమేరలో నెక్కడను జనంబున్నబాడ గానిపించుటలేదు. అయినను సీపాఁగినిమన నెచ్చటకైన చుంపకపోవు. ననుచుటాకేసి నిపు వెగుల నెప్పుడుఁబడి. క్రోమవాయ మెక్కి తలసేపిచ్చట విశ్రాంతిపుము. నేనుగన నీకుఁ బొందంగుంటు గొనిపోయెదను.

తార—అన్నయ్యా! పోనిమ్ము. నాకు దాహముక్కరలేదులే. న్నాకై నీవు త్రాగుచునవలదు.

కవక—అమ్మా! నీవు సంతరింపకుము. నీవు మిగుల దాహముగొనియున్నట్లు నీపదవలె నొలుపుచున్నవి. నేను సత్వరంబుగ నే వచ్చెదను. నీవుమాత్రము ఇగఁగూతురాలవై యుండుము.

తార—నీవుమాత్రము కీర్తునముగా రావలయును.

కవక—సత్వరమ్ముగ నే వచ్చెదను.

(నిష్క్రమించుచున్నాడు.)

(13) పాట. యమునా కళ్యాణిరాగము - ఆదితాళము.

ప॥ తల్లి శాంతికి నిత్యమంగళానతి కలుషహరీ కళ్యాణీకాత్యాయనీ॥

తల్లి॥

అ॥ ప॥ పిల్లలనుమ్మా పితృవిహీనులము యిల్లా వాకిలా తల్లా మాకిటా యెల్లవిధంబులదిక్కు నీవేగాన చల్లని సత్కృపచల్లిభావవే॥ తల్లి॥

తార—(తనలో) అక్కరండుగురుప్రబుద్ధిమాకెట్టియిడుములు

నూచినాడు. ఆకర్మాత్మ వాచరిహదలచిన సాహస కృత్యము
చను భీతి మాముక్కు యేదానిబోయెనో. జీవమున నే నున్న
యోగి యోగ్య నాడ నానందము కలెద్యును నానా
పాపములై నిరపరాధిచేతి నాకీ గురువు మును నా హరిచే
వేమికోరినా, కాని నున్న పాపముల బ్రతికోనిననుచున్నాను.
కాలనూ! నీ ప్రతిభా దగినదాచు. నీ యాషణములో నే నాప
ధనికునిగా జేయుదువు. భక్తుని నిరపేదగా కోర్చి యున్నాను
బ్రహ్మకు. (ఇరుకె యూరకు డిలుకునట జూచి) ఇలలుల దె
చ్చుకురికిన యన్న ముగను రాజాయెను. పులుల మాత్మబాబులు
ను, సిహనాదంబులును, హృదయ భేదనం గాచరిపుచున్నవి

[రాముడు—భీముడు—నమరువురు దొంగలు పోవేము.]

రాము—(భీమునిజూచి) యిట్లొకల్లా దొంగలును గొప్ప
దిరా. దాన్నిమించింది ముకోలేదు. డిబ్బు నాలా సాహసముచా
లంటి యివి - నేర్చుకోవాలి. అన్ని సకలకలకల ముది సాలా
కన్నంతవ్వట న రేకిదా. బజార్లలో రక్తగాపూడప్పుడు చచ్చేపోయేవాని
జిబ్బు విలాసిను, సతా లదిగ్గర రాత్రిల్లి పగులొన్న ఆపవాళ్ళ
మెళ్ళి వి కిత్తిరించడం మొదలయినప సాలాగాడులునా అగా.

భీము—నీకు తెలియని వేమున్నామురా. నీవు దొంగలకా గు
రువువే అయితే.

రాము—ఏం గురువురా. మనోశ్శ్లో కల్పిక్కులేదో. ఈ
డాన అమ్మో పుచ్చనం సర్దిగ నేయకపోవడంపా మన దొంగలనా
చాగడంలేదు. ఆయమ్మ మనమీద సిన్నచూపు సూర్యుడుది. నేను
సెప్పినవట్లముం కీనా మనోశ్శ్లో ఏం తమసా అయిన ప్రాంతి.

భీము—పాపం మనకేంరా.

రాము—ఏం యనడం. నీన్నరాత్రి ఒక సోదానాదా ము,

న్నాను. ఒక సో తుమిటిలే. అమ్మోరుపండుగ సేయడానికి సారాకొన వస్తురామరి. అందుకని సారాకొట్టుకు కన్నయ్యేసి రెండుపీచాలు దొ ళ్ళితుకొధామూట యేక వెగస్సినారు. ఎల్లాగయితేనేం పచ్చారులే. కాని అమ్మోర్కేవేమక సెయ్యడానికి ఒక కన్నెపిల్లను బలిస్తామా. అ మ్మోర్కిమనమీదయెల్లా దయవస్తుదనుకొన్నావు.

భీము—త్వరగా నడువూ. మరోళ్ళు కనిపెట్టుకొంటారు.

(ఇరువురు నడుచుచున్నారు.)

భీము—(ఇంచుక నడిచి) ఒరీ! రాముడూ! ఇదేటోయీ. ఇక్కడ తలెత్తగా మెరమెరాలాడుచుంది. ఎవరో ఆడమచ్చలాగుంది. యెవ్వరులేకుండా ఒక్కర్తేవుందిరా. కారణమేంటో కూంత కనుక్కుం దామా యోరీ.

రాము—ననుక్కొనకుంటామరి. (సమీపించి) పిల్లా! మీది యేమిట.

తె—అయ్యలారా! మీరెవరు?

రాము—మేమా! యీ సమీపంలో వున్న పల్లెలా రేమాది. చేను కొడిపోయి నుత్తున్నాము. నువ్విల్లాగ వంటరిగా యున్నా వేటి.

తార—కొన్ని కారణంతరములచేత నేనును మాయన్నయ్య సిద్ధర్థములపాలయి పోతిమి. ఆతఁడు జలంబులకొఱకే పొంతమునకే యరిగినాడు. నేనాతని రాకకై వేచియున్నాను.

రాము—(భీమునితో రహస్యముగా) ఏదన్నా “బేలు” వేసి దీన్ని అమ్మోరుగుడికి తీసెల్లాలి. (ప్రకాశముగా తారతో) అయ్యో పిచ్చితల్లి! ఆయనకోసం చూస్తున్నావా? ఇంకా ఆయన. * *

తార—అన్నలారా! అట్లు పలుకుచుండిరేమి? అతనిని మీరు చూచియుండిరా?

రాము—ఆయన ఎవ్వరో మాకేమి తెలుస్తుందికాని ఆయన

మంచిస్థితికోసం మాత్రగయెతుకుచున్నాడగా మాతాత్తుగా పోదానో
చి పెద్దపులివచ్చినట్ల కలుచుకుపోయింది.

తార—అహా! అక్కడే నాయనగారు కూర్చోవురు.
(మూర్ఖునిలేచి) హా! అగ్గిదా!

చా. జనకుని, దుష్టబుద్ధియగు ♦ సోపేన; ద్వయమున ముగియనా
తనకి భయంబునాదితన ♦ దానిచిబోయిన; శోక ముగ్ధునా
మనమున మింగియుంటి గుణ ♦ మాన్యుడనివిలువైనవాడు, నో
యరుజ! ఇదేలకీపును ♦ న్యాయమె నన్నికనానిపోవగల.

అక్కడ! జలబులు గొని తెచ్చుచి చిన్న సేనల పంపితిని?

తే. గీ. తగునె యానీతి ఘోరగా ♦ తారయగు

మోహిగాఁ జేసినాన న ♦ స్థాపై నీరు

జిత్త మక్కటా నక్షాగూడ ♦ కేరనిమ్ము

నిపు పడియున్నచోకి ♦ శ్వచుముగ.

అయ్యో! నిన్ను విడిచి నేనుమాత్రము నేనమల భరించియుండునా?

రాము—చచ్చిననానికోసం యేమిస్తీ చేసినాభావముగా.
మరల నచ్చెదరా?

తార—అయ్యో! నూయన్నయిది రాజు. రాజునా! సోదరా!

(మూర్ఖునివచ్చుది.)

రాము—ఒరే! నేనేసిన యెత్తు బాగానే పడిందిరా. చూడు.
మూర్ఖుసాదింది. పంపాదిగా మనం ఇద్దరము యీపిల్లను కాళికాదే
విగుడికి తీస్తానివెళ్ళుదాము. మనకోరిక ఇయ్యాలను పండింది. అ
మ్మారి దయవచ్చే రోజువచ్చింది. ఏదలినా పెట్టవుట్ట లిరా.

భీము—నీవు చాదస్తం ముండాకొడుకువు. కబుర్లు పెట్టుత
యీపిల్ల మళ్ళీ లెగుస్తుంది. కానీ. మరీ.

రాము—అల్లంగయితే కానియ్యి (ఇరువురుగలసి తారను తీసుకొనిపోవుచున్నారు.)

[కనకవర్మ పోవేళించును.]

కన—(తనలో) జలంబులు గొనివెచ్చుటకు మిగుల తడవైనది. న్నాకై నీవీక్షింపుచు నాచెల్లెలెంత భయంబునందుచున్నదో. (ఇంచుక నడచిచూచి) ఈసలంబునందే కదా నాసోదరిని విడిచి వెళ్ళితిని. ఆమె యుచ్చోటను గానరాదేమి? (ఇంచుకనడచి నలుదెసలఁ బరికించి) అక్కడ! ఆమెయింక కనుపడదేమి? ఈయరణ్యంబుననున్న విచిత్రంబుల నవయుట కరిగినేమో! (అలోచించి) నేను లేనప్పుడామె యట్లు చేయునో. (ఇంచుక యూగుండు) అయ్యో! ఏమైనదోకదా. (తారచుట్టించి)

నే. గీ. దాహబాధను కీర్చుగాఁ ♦ దలచి జలము

నరసి గొనిరాగి నన్వేడి ♦ యరిగినాడ

నితలోపల ననువీడి ♦ యెందుకని

నో! యెటుంగనాలకుండి ను ♦ భోజనేల్లి.

చెల్లెలా! పొడ్డిగతిందినను, దల్లి యేవానినిబోయెనో యెరుంగకుండినను, నీవుగోవికదాయని చెప్పింత ధైర్యముబూనియుంటిని. నాతోఁ జరిగినది నీవ్వలనెంతో, పోణములైనదో యెఱిగిబోలుతివా! నేక యేర్పాటునుచాలైనఁ బడితివా? అట్లుగాకయున్న “నానై నగ్నిన క్షోణి స్ఫూనున నో యెటుంగనలయు” నని శలించి యెఱైన కాగియుంటివా? అయ్యో! ఎంతపించినను బుకవేయి? సోదరీ! నీవు నాదిర్తంబును శోభింపననరములేకు. నీవు బ్రతికిన నేను బ్రదుకుచును. (ఇంచుక నడచి) ఎంతవెదకినను నాచెల్లెలు గానరాకున్నది. ఆమెను ఏర్పాటుముగా నేమార్గమృగంబోగింపొలుయందును. అక్కడ! ఆమెలేని నాకీవమేల? (భగవంతు నుదేశించి) పరమేశ్వరా!

దీనికంతకును నీవు కారణుడవని నిన్ను నిందింపవలసియున్నది.

తే. గీ. దుష్టబుద్ధిచేతను దగడ్డి ♦ మనుమజేసి
తల్లి నారీతిశాపి; ము ♦ దుబుగూర్పు
ముగ్గుచెల్లెలను నరణ్య ♦ హమియగు
కేమిజేసితి యొక్కీత ♦ యెఱుంగఁజాల
నింక నేమేమి కావింప ♦ నొచ్చినామో.

తండ్రి! నీవు పెట్టడలంచిన కడిగిండ్లకన్నీటిని యెడిబట్టినాను. ఇంక నీచిత్తము పాణములు పోయినతరువాత వివేచనేయగలవి? (ఇరు క యూరకుడి) కేసిరీతినఁ జూచి పురుఁ గాలహరిణా వివరించుచు వలనఁ బ్రయోజన బేరియున్నది? చెల్లు హుంకరసేవఁగాక.

మ. నరపూర్ణగుణిణీలు నెమ్ముగముఖీ ♦ భాస్వి కంజాక్షి; సో
చరుసోనాదలు భక్తితోకలుగునా ♦ తన్వరి; తల్లిండ్రిల్
ధరశిశువాపియు నన్నజూచికొనిమో ♦ దుబాగునక్కంత నో
తగులారా! గిరులార! కింగోరెలుట ♦ దారకసత్తమున్.

(నమ్మిమీచుచున్నాడు)

అను.

గంగము:— పల్లనాయకుని గృహము.

[ప్రవేశము—చారుమతి]

(14) పాట. సంగ! కిరీరాగము కళ్యాణము.

ప॥ హతవిధి కాలస్యము మార్పులచుచ్చెను.

అ॥ ప॥ పుణిగులను శాపి మదమ ముటగు నను గొనవచ్చెను సప్త
ద్వీపసముద్రమునీతి భూచోమేలు చిత్రచేనచక్రివర్తి పట్ట
మహిషైకైన్య నేర్చు పల్లవానిలుటను నాకాలుడెట్లవలసెన
మాన-॥ హత॥

చారు:—(తనలో) అహ! నానీ యెట్ల గామాలోనది. సప్తద్వీ
పసముద్రముద్రితమహిచక్రియు బహిపాలించు రాజేంద్రునకు భార్య

నైన నేను వట్లవాని గృహులున నుండును గతిపట్టినదిగాదా. కాల
గతి తప్పినట్టివప్పుడెవ్వరిన నేమిచేయగలరు?

తే. గె. గీతలే బాగుకను బు ధిగ్గడలగును

వేద భక్తులగు ధనికులు ధేదయగును

సునుతి, కునుతి, గును గునుతి సునుతియగును

కాల మన్యగుదాటించి గలరు జగతి.

గీతాసముద్రమున బడినోని తీవ్రములంబూ యుటి నేని నాకీచింత
యుండునో నేదా. 'పట్టణ' నాకడయుండును, దనయయు నేమై
కోసదా. మనో నా కూర్మిగొన్న పను కున్నబుని వానిని జూపించి
యుండునదా, 'మన్య' రా' మింకొకటి. జగముననుండి
రావేదా. ఆ పట్టణము మింకొకటి మింకొకటి దెలియకుండ జేసి
నాకుండు. పట్టణము మింకొకటి మింకొకటి నేను మరల మిమ్ము
జూడమునుకనా? పట్టణ భౌగోళమును నేను నోమకొనియుంటానా?
అయ్యో! నాకీయుని యొకరు!

[పట్టణాయును పోవేళము]

పట్టణ -- చాగునుండినాది (తనలో) ఇదిగో! నాగునుతి లిక్క
డకుకూడా. నీ మొగ్గు గొనని కుగ్గుగుగ్గు. ఇటువంటి రవ్వం
టప్పిపుట రాజ్యాలకు గీత్యాలగును. ఇదే మోచ్చు. ఇదే
వొర్లు. ఇమ్మాల దీర్చి మనము పాఠ కుఠాత గనపాలి. నానుంటిది
కూడా మిమ్మలో ప మనమనుమ మదే (చాగునుతి సమీపి
చి) పా శాగునుతి' ఇమ్మాల మదా అందొచ్చిస్తావాపు బొగ పట్టెకు
న్నావామోగి, నా యుటికొక ను నోటూటి. మన్యోచ్చినకాడను
చి యుటికొనిమీద మనలోవలె లేను. నూశావా! సంగతి.

చాగు -- తనలో) నుగి! పట్టణ పునుమన్నాను నీచకుల
కాడనుచే ముగ్గునొకప్పుడు తెలియక లిక్లు పలుకుచుండనోవు.

పల్లె—పిల్ల! మాట్లాడివేరే. నామాటాల్ని నెల్లొసానాకా
మోసు అల్లదిగో అప్పుమీ ఇన్ని సముద్రంలాగి వి ఓశానే అనాటి
కాడినుంచి యో శెప్పను మీది మనసునాటిది అబ్బా నెప్పుడో
ననుకొంటున్నగాని చిక్కప పురుకుకుంటున్నాను. ఏమనితే అయి
దని యిమ్మాలలోన నేప్పేస్తున్నాను. మాని అది అనుకాదూ.

చారు—హరి హరి! ఎంతమాట అబ్బి!

శే. గీ. పాణదానైన గుహల * పల్లెనా
నన్నుదల్లిగానైన * నాగి హు
గోరుకువె ముగిసిపో * గుచులేనగుచు
బరిహసి పద నీవకి * బరుగుచున్న.

నాయినా! శివునియో శివయొకడో యిదిగితివి. అబ్బమాట వివేచకు
ను ననుచును. నే వివేచకును.

[పల్లెనాయకుని గొప్పయగు ఎల్ల సప్రవేశము.]

పల్లె—(తనలో) నామీను నీవు అనాటికొని ను శివ
యొకడో దీవుతో మాట్లాడునా యు. పాటగా పూడి పాట
యిందాము.

(చాటున వస్తును)

పల్లె—నూను శివునితో! యిమాటలు కీటిగానీ, నూన్ తల్లి
వికాపు నేను కొడుకునుగాను నామాటయొక్కో, మొగుడుసన్నిహితు
నానుకదా. బిడ్డలమాట అసలే శివయొక్కొ పూడిది. ఎందుకు సి
క్కులప్పు. ఇన్ని నేను పెద్దానుతాను. నాలో నుగ్గొచ్చుచున్నాను.
నువ్వ నన్ను పెద్దాడినానంట నెపాదసాధ్యుగా నున్నాను. ఇంతాన్ని
తగిలేస్తాను..

చారు—అయీ! పల్లెవాడే! సముద్రంబునబడి చచ్చుటకు
సిద్ధముగా నున్న నన్ను కీర్తిరథిగాని శిష్టి యిట్లు పలుకుట భావ్య

ముకాదు. ధరకాంక్షలనుగోరుట మహాపాపము. నీచుడవగుటచే దెలియక నిట్లుచుడు. ఇంక నట్టి పరిశంస గట్టిపెట్టుము.

పల్లె—నీను పల్లెపల్లె అని సూదహిస్తువావు కామోను. మీరు తుల్యములు. మీను పల్లెకుల తోలియులము. మాదీ శాపలబ్ధుడొలో పోయెను. నీను. నీమేముచుకొన్నావెంటి మీకేం తీసిపోం. నాప మేంటి, పుణ్యమేంటి, సన్నితరువాలె యిదంతా యెవరనుస్తారు. నీవు నన్ను మొగుడుగా సూసుకొంటివా నీను శాపలబ్ధుకొని వాటి మీద పోయిన డబ్బులు నీసేతు పట్టును. నామాట యిను. కాదనకు (సమీపించును)

చారు—ఛీ! ఛీ! దూరముగా నుండుము.

పల్లె—నీ నీ-అంటావు. మాలోడ్చి అనుకొన్నావా యేంటి? సరి. సరి. నీయందా సూతేటప్పటికి భ్రమపుట్టింది. మాకులంబోర్సం దరికి నేనే నాయకుడిని. నువు నాకు పెళ్ళానవు అయినావంటే ఆళ్ళంతా నీగులాబోళ్ళయియుంటారు. నీకు రాణికంటే యెక్కువగా జరుగుతాది.

పల్లె—(తనలో) దీన్ని యింటికి సేరదీసిందిదుకే కామోను. ఇది యింటిని పెళ్ళాడితే నన్ను తగిలెస్తానంటున్నాడు. ఇంకా కొన్నాళ్ళముండ యిక్కడందంటే యాడంతవని శేస్తాడు. ఈముండని యిక్కడనుంచి లేవకొట్టాలి. (పల్లెనాయకుని సమీపించి) ఏంటి. దీనితో రహస్యం. మాట్లాడుతుండావు. ఇది నీయబ్బవంక స్వట్టమా, అమ్మవంక స్వట్టమా.

పల్లె—(తనలో) ఈముండ నామాట విందాయేంటి. యింటి కొంపముంచేస్తుంది. మా గయ్యాలి. (ప్రకాశముగా) ఏలేదే. పాపం యేడుస్తుంటే పూరుకోమని నెప్పున్నాను.

పల్లె—ఏంబాంకు బాంకు తావు. నాను యింటులేడు. దీన్ని

పెండ్లాడడానికి నూస్తూండావా యేటి? నాకుంటుంది సక్కాదా యేటి? మనా కూతురినే కించంలాగ దీని మొగ్గుగాది. ఇకొచ్చిన కాకినూచి శాపలబ్ధిడానికి యెల్లకూడా నన్ను. ఈ ననా నీ యెక్కడ దొరికిందో. నాలు నాలు నీన్నీ పెండ్లాడినావో. నీకు పెండ్లా నానుసేస్తానురా! (చీపురుగట్ట బిల్లి కొట్టు మున్నది.)

పల్లె—ఇదే ట! మొగుడును కొన్నా. చీపురు నూతనం, టు నవ్వుతారు. పెండ్లాచేత చెబ్బలు అన్నాడని నీవు కళ్ళవిప్పిస్తా. పూరుకుంటే.

పల్లె—ఎక్కిరిపీచేయో జవవి. నిగులె నెరుధిర! దీన్ని కట్టుకొని నన్ను తిగిలేద్దామని సూర్యులవా! (మొగ్గు కొట్టు మున్నది.)

చారు—(పల్లెనిజూచి) ఆమదానా? నామాలు ముక్కిమొక యాలింపుము. పటిసంగొట్టాటగానీ దూషింపటగాని సతకం దగరు. నీ వట్టి నాపాసంబును బూసకుము. (చేయి కట్టుకొనును)

పల్లె—(చేయి విడిపించుకొని) ఇదెక్కడ నెన్ను ముల్లకృష్ణడానికి డి. వదలొగులు. నువ్వడిని కట్టుకొని నాకాపురంకో నెవ్వోయోబ కుల సూస్తూండావా యేటి? యిక్కడినుండిగంపు నిమునమున్నా. (పొళ్ళచేత నెప్పుచెబ్బలు కొట్టెస్తాను. చీదడది. (గోతలమిద్దూమ. బుల

చారు—(తనలో) అక్కటా! పల్లెనిచులచేత చించున.) బాండుచుంటిని. (నెమ్మకొని నుగ్గులాడా.

పల్లె—(పల్లెనాయకుని జూచి) ఇక పెళ్ళాడుపో.

పల్లె—ఛీ! ముండా నువ్వ నాకక్కరలే

పల్లె—నేనక్కరలేదా. యియ్యాల (నెమ్మకొని మున్నది.) ప్తాను కాళ్ళిరగేస్తాను.

పల్లె—ఈముండ అల్లరిచేస్తుంది (పల్లెగయినా దన్ను బలబూ లుకోవాలి లేకపోతే తిగిసిపోతుంది. (నెమ్మకొని మున్నది.)

జరిగిందో బయలుపడుట నుద్దరముకదా (అటునిటుజూచి) ఏమిదీ! వేట గాండింగను నన్ను గలుసుకొనలేకయుండిరి.

రాము—(తారనుచూచి) వూరికే యేడుస్తామెనుకు. శుభం గా మీరు నిన్ను జేవతకు బలిస్తూవుంటే యేడుపేంటి. సంతోషంగా వుండి దేవుడికి మొక్కుకో.

తార—(నవ్వుచూచి) యో! ఈకూరలు నిర్గయబూని, నన్ను హింసింపుచున్నారు. నీటిపు నాకష్టములు గట్టెక్కును. తల్లిదండ్రుల విషనాశిలినను చింతిగాడ యగుగొలుగును. నన్ను నీకు చాపుచుండిరని నేను విచారింపనుగాని, నాబాడ దెలియక నాయన్న నన్నుగూర్చి యేమికష్టముల పాలగుచుండెనోయని మాత్రము దూకుచెడను (సోద రుడుదేహించి) నన్నయ్యా! నీకు నన్ను జంపుట నిశ్చయము. కావున,

తే. శీ. తింజ్జి పివతంజ్జిచేత ని + ధ్వాల్కియూ

నన్ను నీకదారి చెవటికో + యుగిసె; మున్న

చెల్లెలికితో జనెనయ + జత్తయగు

దలచి, పొగిముల్ వీడంగ + వలకునున్ను.

రాము—(తారనుచూచి) నువ్వు భగవంతుణ్ణి వేడుకోవడం అయిందా?

జయ—(నవ్వుచూచి) ఈప్రాంతమున మరుజులమాటలు వినవచ్చు చున్నవి. ఈసమీపమున నెవ్వరైన నుండిరికాబోలు. (ఊచుక నడచి) ఇదిగో నచ్చట కళ్ళు తెరుచు మొక్కు దేవాలముబున్నది.

భీము—పిల్ల! కొందరుగా గానియ్యాలి.

(15) పాట. శీలువాగము - ఏకతాళము.

ప॥ శారీ అంబాశారీ కరుణాభరణీ త్రిగజ్జననీబోధుము యీతరినీ
అ॥ ప॥ కూరలు నాయెడ ఘోరకృత్యమొనరింపనుండో వీరలెవ్వ
కు దిక్కరయ్య! నివెనుగవా. పల్లవిన్న నమ్ముమున్నవారు! శారీ!

తార—(తనలో) అక్కణ్ణ! మీరు నన్ను జూపుటకుఁ దొందర పడుచున్నారు. హాపర మీశ్వరా! నన్ను పుట్టి మీ బాఁడునుండి రక్షించు వారెవరు? ఈనిర్బీనారణ్యమున నాయేకుపు నాలించువారెవరు?

సీ. అనుజన్ముడే కూర్మిరుఁ డెచును మాతంగి

మనుమాడి; యూపైన డచనియెడల

మొరబుద్ధినిఁబూన డగుది భయమున మా

ఁచని యేదానినో డచనియె, నత

పైన పైపక నన్ను డనాయగ్నినిఁ జగప

గావకుహర గి డకరుల వేడి

బ్రగుకు తెరువుఁగాంచి డవచ్చుచునుడగ

దానిలోపల నేను డదాహశాధర

సందాగ జలముల డనగసి తెచ్చుటకునె

నాయన్న యిక్కచోట డనన్నువి

తే. గీ. యిదిగె, భీకరాక్ష్యాలు డనగుచున్న

నన్ను వంచించి కీరిల డన్యాయు

దేవికి బలిసేయఁగాఁ డచ్చెనారు

చిత్తమందున భీతి డశానమున్న

నన్ను తెప్పించి గాచుపు డజ్యోత్స్న

పైన నేరె రాజేంద్రుఁ డలఘున

జయ—(తనలో) ఎవ్వరో మెక

యాలయాలున విలపించుచున్నట్లున్నది. (ప్రే) కిరాతులచేజక్కి యీ

(బిగ్గటగా)

చ. మనమునఁ భీతిఁజెంద కను డ

వనజదళాక్షి నిన్నుఁ బలు డ

హానములేకరు వచ్చుచుంటి; నో
తల పొనొకరింపనున్నగు

రనుల వధించి గాచెదను * శోర్యపరాక్రమవృత్తు శేర్పడక
జనపత్నియైన వాడెప్పుడు * సాకిన బాగద దీనిలోకముకా.

(అని గుడిలోఁ బ్రవేశించి దొంగలరుజుబావి)

శంసదాసురము.

అశేషరాత్నలార ది యుగ్మ * రాత్నలైపుడని నీ

సర్వోపశ్రవణస్థలము * నీ సునివాసము

నిరాస పాణిశోకుండు * విక్రమిమాటు మూలగా

కరాటచేత గుడ్డు నేను * కరుణ నీవు తన.

(పిమ్మట నీ దిశఁబ్రవృద్ధుడైనాడు)

భీము—పిమ్మటను. ఈ కుము గిరిలోను. గా కలలోను.

కాలికి 2. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847. 848. 849. 850. 851. 852. 853. 854. 855. 856. 857. 858. 859. 860. 861. 862. 863. 864. 865. 866. 867. 868. 869. 870. 871. 872. 873. 874. 875. 876. 877. 878. 879. 880. 881. 882. 883. 884. 885. 886. 887. 888. 889. 890. 891. 892. 893. 894. 895. 896. 897. 898. 899. 900. 901. 902. 903. 904. 905. 906. 907. 908. 909. 910. 911. 912. 913. 914. 915. 916. 917. 918. 919. 920. 921. 922. 923. 924. 925. 926. 927. 928. 929. 930. 931. 932. 933. 934. 935. 936. 937. 938. 939. 940. 941. 942. 943. 944. 945. 946. 947. 948. 949. 950. 951. 952. 953. 954. 955. 956. 957. 958. 959. 960. 961. 962. 963. 964. 965. 966. 967. 968. 969. 970. 971. 972. 973. 974. 975. 976. 977. 978. 979. 980. 981. 982. 983. 984. 985. 986. 987. 988. 989. 990. 991. 992. 993. 994. 995. 996. 997. 998. 999. 1000.

భీము—పిమ్మటను. ఈ కుము గిరిలోను. గా కలలోను.

(తొలగిపోయెను)

తార—(తనలో) ఈమహాత్ము డెచ్చోటి వా? నాయెడలగను
ణబూని ధక్షిణాక్షుడను నాచివాడు. (ఎరుకబూని) మరో కిరాతులను
వధించికాగోలు నా కెప్పుడమ్మని నా.

జయ—(చాళికిలోనికి) నమో నమో! ఇప్పు కిరాతిగడదలచిన
యాకిరాతము ఈ కిరాతిగాను. ఇది కిరాతిగాను విడుదలు.

తార—నా. కిరాతిగాను. ఇది కిరాతిగాను విడుదలు.
నన్ను రక్షించి నీవు పుష్పించును నెచ్చోటో మెఱుంగ
వచ్చనా?

జయ—శ్యామూర్తివహా! ఇప్పు కిరాతిదూరంబున నున్న
కల్యాణపురాబురు బాలిమ జయింపేమహాపుష్పించును. నేమృగ
యావ్యాజున నిన్నుకల్యాణుల కిడుకెది, నివిరాపం బాలించి
నిన్ను రక్షింపదలచి వచ్చితి. ఇప్పు కిరాతిగాను విడిచి.

తార—

చ. జనపతివారేచ నర! గుణ! సత్తమ! సత్కృతమూని యూషదకా
మునిగితపించు నర్హి పు మ! బోధనగి నే జనుచుచి చిగిగులకా *
దునిరుముదుబుగూర్చిని * ము వినుతించుతొలుత మేయకా
బాననువదాల, లేనది; పరి * పూర్వము బగు భక్తిమొక్కదళ .

జయ—శివ్యామహ! నయదాత లే నయగిదగునా?

తార—ప్రణదాతృన నమోమగిగూడ వారే నమ పాద్య
దేశ వృతాలుగిగు నర్హి నేనా యుత్తరాతమ. ము పీచుగిదోచుగు
దృష్టబుద్ధి మూతా-బ్రహ్మహిత వ్రాహ్మణులచి తగ్గారోల సమయాబు
న వధించి, మాతల్లిపై నుద్దబుగిబాపిన నానె యెటుకోపోయెను.
సన్నను, మాయన్నయగు కనకవర్ణమగూడ వధించిరెడసి శిలారలను
నరణ్యంబునకుం బాప, మేమూకగిగులను వేమకొని ప్రాణంబుల
దక్కించుకొని వచ్చుచుండి, దానూదీక్షితకగు నానిమిత్తము నాయగ్గి
జండు జలంబుల గొని తిచ్చిరకుం బోవ, వన్నెచోరులు వంచించి
యిట్లు గొనిపోచ్చెగి. (తానుకె యూచకుండ) భూపాలా! బ్రదికియున్నం
దువలన బ్రహ్మజన మేమియున్నది? తోడ్కోలాం గొనివెను. తల్లిజా
డలా తల్లియన. ముతరణ్య మధ్యమందగ్గిరి విడిచితిని. మనస్సును
నెంతరాయిగాఁ జీసికొనియున్నను, ప్రాణములపై నీపిహంత్రము పోన
కయున్నది. (కన్నీరు విడుచుచున్నది)

జయ—తల్లీ! నీవు చింతింపవలదు. మీగు నాకు బాధుకోటి
లోనివారు.

తే. గీ. కాలమొకరీతి నెవ్వారు * గడువగలరు

ధరణియందున వినుచులే * తల్లిమమ్మ

రాజ్యమునువీడి పాండు పు * తోరు లరణ్య

మందు వసియింప లేనె దా * యలకతమున,

తల్లీ! నీవు నన్నునుగా భావింపవలదు. నీవు మాగృహంబున నుండుము. నాపుత్రిక యొకటియును నీవొకటియును గాదు మీవారిజాడల నరయుటకై తగువానిని నియోగిం చెదను. నీవు సంతాప మొందవలదు.

తార—మహాత్మా! నీవే నాకుఁ దుడ్డివంటివాడవు.

జయ—అమ్మా! నీవేమియు భయంబువలదు. రమ్మ.

(ఇరువురును క్షిప్రముగా మారుచున్నారు)

ఇది తృతీయాంకము.





సంసీత కనుక తార.

చతుర్థాంశము.

of

అంశము :—జనాభాపరివేశము.

ప్రశ్నలు—వాసుదేవి.

చాచా—(గొప్పగా) అది భగవంతుడు! పన్నెట్టి లుక్కల్లల వాలు
జేసిలివి! అది స్త్రీ, స్త్రీమూలంబాలవగు పన్నెట్టివా! స్త్రీమూలంబునగు
గూడ నొక్కొక్కటికొకటి (కన్నలు నుగ్గలం) పై గుట్టబుడ్ల!
వీకన్నులెక్కొక్కటి బుడ్లబుడ్లదా. చుమ్మలంబునను స్త్రీ మూలము
జేసినను. పామూత్తము తాత్కాలికమగు బుడ్ల చుమ్మలంబునను
ని, యుగంబు నేమియుచులేదు. నిను, పాపంబు స్త్రీలనుపకవిషయ
నా? (స్త్రీ మూలం) పాపంబా! మీరెందులది? మీకు పుట్టి
బుడ్లచేత పుట్టించబడలేదని మాల్కము నాకు పుట్టియులుగుచున్నది.
అమ్మాయి! తారా!

ತೆ. ೨. ಮಲಯಾಳ ಸ್ಥಲ-ಕುಲು • ಜ್ಞಾನ ಕುಲವ

భవ్యసౌధ-బాలంకూట • ౧౮౮౫

కాననాభిరే వేద్యుఁ ♦ కష్టమూర్తుఁ

జింకాచుట్టిపూ యంచును ♦ సుగూదాన.

నీతి గొనూడ నీయాగ్రహించునుగూడ నుండేనని పుష్కంత సంతోష
మగ నూడవని ఈ చును. అయ్యో! పుష్కెడ సంతోష ముందు?
ఉ. ఎక్కడ కేగినా ఉచును ♦ తెప్ప పువచ్చు నటించుచుచు
• మిక్కిలి గోరుచుండెదవు ♦ నిన్ను విగ్రహముల్; మనగలున

చారు—ఆతఁడెవ్వరో గదా!

(తెరచి కన్నులు)

చారు—అమమమమ! భాణము తగిలి నేలంబును నావ్యా
ఘంబు యరణ్యమంతయు బ్రతిధ్వనులిచ్చునట్లుచినది. అమమో!
పులిగొని పుణ్యస్థానమున నున్నదానా.

[సుమతిపరీక్షించుచు.]

చారు—(సుమతిపరీక్షించి) కృష్ణమోక్షాద్! గాఢపాపాత్ము
రాలైన దిమ్మమానినదా! ఆగళ్ళ సోమంతు రాలైన యూషియు,
విధవశంబున కరణ్యములుగ బెడిదపుణిమములు బసమన్న చాయ
గల గృహవసాది యావ్యాఘంబునకుఁ బొంతునుమద నీ
వేల సుమమాడితివి? నావ్యాఘ్రముచే నశించినది యుగి నేని
నావృత్తులన్నియుఁ గల్గెక్కియుండును గదా?

సుమ—అయ్యో! సతమాటాటివి?

తే. గీ. ఆమదానచ నైకిఁగి న్యాసుఁమొనరి

యదుగురెంచును నుడంగఁగి కరణ; సుతు

గన్న నెను జూచుదుచుండఁగి కలకె; యుగ

పాపింతును నెదిరితేఁగి భావమగు.

ఆపదబాధించినది జేర్చుకొనంత పరికుఁడైనవలయును గ
దా? (ఇంచుకయూరకుడి) కాతామ! కృష్ణసుఖములు కావటికుం
డల వంటివి. కొన్నాళ్లు చీకాయ కొన్నాళ్లు వెన్నెలయు నుండును
గదా. అట్లే కష్టసుఖములుగూడ ప్రసాదించును సుఖవిషయము
న్నది. కష్టము వచ్చినపుడు దుఃఖములు, సుఖముగలిగి నప్పుడంద
మును బొందుట లోకసామాన్యమైన సంగతియే.

చారు—అందరికష్టము వలనదిగాని కేవలసుఖమే వినది.

సుమ—సాక్షాత్తుండే! కష్టము కలఁజూడఁగి లోక మహాభావము

భార్యననియు, నిరవధికధనసంపత్తు చేత నెగజినదానననియు, దోచుచున్నది. నీయుదంతం బిస్తుమంత యెఱుంగఁదగును నేని యెఱింగింపఁగోరెదను.

చాను—అయ్యా! నాబ్రాహ్మకొక యభినాటకము వంటిది. భర్తగిరించినాడు కుమారియు. గుహానుశుచు నేక్కిరో వెలియదయ్యెను. ఇంతకింతను హర్షరమగు కష్టమేమి కావలయును?

సుమ—తల్లీ! నన్నుజూచిన నాకు మిగులజాలి కలుగుచున్నది. నేనీసమీపమున నున్న దాచునగరాలు నసాచుచున్నాఁడ. నీవు నాయెడలగృహనశించి నాగ్రహాలుచకు విచ్చేయును. నీవిచ్చట నీయుచ్చవచ్చినన్ని దినాలు బుడవచ్చును. నాకును బిల్లులకలరు. నిన్ను నేను మాతృభావమున నానెడనని విశ్వసింపును.

చాను—(తనలో) ఈసమయమున నిదియు మేలుగానేయున్నది. నెమ్మదిగా నీతినిగ్రహించున కరిగిన లెరుచాత నానిష్కలజాడ నితని చే దీయించెదఁగాక. ఈతఁడు పుష్పమతి యని తోచుచున్నది (ప్రకాశముగా) నాయనా! నీనాచుము నీవవచ్చినా?

సుమ—సుమతియందును.

చాను—నీవు నిచ్చయముగా నన్వరసాగుభేయుడను. నీవు నాయెడలజూపిన యాచారమును నీవు నీవే వదనకరాలు ల్పించుచున్నాను పొగొదాతా! నీయుచ్చవచ్చిన తల్లి గావినెదను. నాయంనుగృహయూచి నానిష్కలజాడ నరియు భారము నీభుజస్కందము నందు వహింపఁగోరెదను.

సుమ—తల్లీ! నీవేని యుభయమునందవలను, రమ్ము.

(ఇరువురును నిష్క్రమించుచున్నారు.)



రంగము:—[రామచరణంబున; సుమతిమూడిరమునఁ
గమల ప్రవేశించును.]

కమ—(ప్రవేశించి) సఖితో! నాపురముసేయుట మిగుల కష్టముగదా! ఈ “నుదరి” జగమునదానే మహిమోదయ్య వలిననియు మగనిని, దశవశముజేసికొని యున్నవనియు మిగుల నిర్విఘ్నముచున్నది. ఇంతకును సాకె నకపలపర సహజేగమున్నది కి? ముగించుచున్నచే పులకగతు నెరుగివచ్చి “కొమ్మలు వాకి” యను సాకెతో చూచుచునా? ఆతె, యాదనుచా? నన్ను మోహింప వలయును గదా! నాపాత్రే న్యగునే సిగిరికవలయును అట్టిటా! ఆయనకు నూర్జిమల యశవలెను. నాచోతఫలమున్నదియు కొనవలెను.

[చారునుని.]

చారు—(కమ) కను నన్ను మిగుల మోహింప నొనరించుచున్నాను. కాని సుమతి రొజుకథ న్నయను సు దశిమాత్రము ఘోరముగాము కలదని యున్నది. ఆతె చిత్తము ననుసరించిగ నేచును బ్రసర్తింపుచునే యుంటిని. (ప్రవేశించి) ఇదిగో! కమల నిచ్చట నున్నది. (సమాపించి) అమ్మా! కమలా! దీర్ఘలోనవతత్సరై యుంటివేరా?

కమ—(చారునుని) నామనశి! నవచ్చివచ్చి నూత్నరాలపు; రాజాధిరాజునకు భార్య . విశదమగునట్లును కనెడివి? నేకున్న సామాన్యమునెచ్చిదా? నా! కన్నులు కప్పించి నాపురము సేయప్ర. తల్లీ! ఉన్నదానయందు సిరులొకతె పోనియనుండకు. నిన్ను నాప్రొంబులతో సమానంబుగఁజూచు కొంగుకేగాని నీచేతకాధ్యమగు సంతపణకెట్టి కార్యంబులునుసేయింపను.

చారు—తల్లీ! కమలా! మీరునాకు కేయచున్న యాదరంబు నాదుఃఖంబును గూడ మఱపించుచున్నది. నేను మీరు మిగులకృమ

కలుగజేయుచుంటినిగా యని మాత్రము విచారింపుచుంటిని.

కను—అమ్మా! చారుమతీ! నీవు మాగృహంబునకు వచ్చిన నాటనుడియు, నాకుచూచుండగు వానంగుడు నన్నుమరచి యున్నాడు. నీవేతల్లివరుచు నొక్కరిమాషచురుచు నెవబాయక యున్నవాడు. నీవేరు కష్టములవగుచుంటిగో యని నేను సూచించుటచు చున్నాను.

చారు—నల్ల! నేను పనుకష్టమేరియును లేకు. మీబాలుని ముద్దుముచ్చటలుజూచుచు నున్న నాకు గుఱిముకూడ నశింపుచున్నది.

[అంగుడు—ప్రవేశము.]

కను—అశాదా! ఇటువచ్చు.

అశం—(చారుమతినిజూచి) చారుమతీ! నువ్వెవ్వక్కలికెళ్ళావు? నీకోసం అదంతా తిరిగితిరిగొచ్చాను. పిన్నమ్మయిటి కెళ్ళావేమో యని అక్కడికెళ్ళావు.

చారు—నాయనా! మీయమ్మగారితో మాట్లాడుచు నిచ్చటనున్నాను (తనలో) ఎట్టి సంతాపంబున నున్నను పసిబిడ్డలమాటలు విన్నంతనేయదిపోవునుగాదా! నాబిడ్డలను జూచు భాగ్యంబునాకు మరలయబ్బదోకదా!

కను—(అశంనునిజూచి) కుమారా? పిన్నమ్మగారి దగ్గలకేల యరిగితివి?

అశం—మన చారుమతి వ్రందేమోలనుకొని.

కను—ఇకెప్పుడునున్న వెళ్ళకుము. ఆమెకుమనయందిష్టము లేనప్పుడేల పోవుచుండ వలయును. (చారుమతినిజూచి) చారుమతీ! మామాసపత్నులపొందిక జూచుచుంటివా!

చారు—ఇది సపత్నులున్న ప్రతిచోటున నున్నదే?

కను—అనుదాతనకు జనియూప కుండుట తనపురాకృతఫా

రభమని తలంపవలయును గాని, నాకుఁ గుమారుండుదయంచెనని య నూయఁజెందియున్నందువలనఁ బ్రయోజనంబేమి యున్నది ?

తే. గీ. కొండెముల నెన్నియో ననుఁ డ గూర్చిపతికి

జెప్పుచుండును; నన్నువీ డ ట్లించినంత

మండిపడుచుండు నామీది డ మగువ; దాని

తోడ నేరీతినాకొనఁ డ గూడుఁబూత్తు.

ఇంతకును నానాధుండుఁడు కిచ్చిన చనువుంబట్టి గర్వాంధకార ప్రమత్తహృదయము యున్నది. నీవయినను నామె యెట్లు జాగరూక రాలవయి మెలంగుచుండుటయే మంచిదని నాయభిప్రాయము.

చారు—నేనును నామె కనుగుణంబుగనే వతికొంపు చు న్నాను. కోపస్వభావయగు నామె యప్పుడప్పుడు నన్న కారణముగ నాగ్రహింపుచుండును. కాని నేనదిమనంబునఁ బెంగ పెట్టుకొనకుండుఁ గాలక్షేపము జేయుచుంటిని.

కమ—అమ్మా! నేడు నాభర్త యుచ్చటకు వచ్చెనేని నీబిడ్డల విషయపైజాడల దీయుటకు దగు బ్రయత్నము సేయుమని చెప్పెదను.

చారు—సాధ్యమగు నుపాయమును పరకారము జేయదాన న నియోయాహింపుము. రమ్మ.

(నిష్క్రమింతురు.)

అంత

రంగమః—[సుందరిగృహ సమీపమున చారుమతి

యానందుని వెత్తుకొని ప్రవేశించును.]

చారు—నేనీగృహంబున బ్రవేశించినది మొదలీ బాల్కండున న్నొక్క నిముషమైన విశ్రవకయున్నాఁడు.

అనఁ—చారుమతి! మనం బోటలోకి వెళ్ళిపుస్తకములకొనుకొను దామురావూ ?

చారు—నాయనా ! ఇప్పుడు మనము వనమునకుఁ బోయితి మేని మీయమ్మ యాగ్రహించును.

[సుందరిగృహద్వారము దగ్గిఁబ్రవేశము.]

సుందరి—ఏమి ! చారుచరీ ! పొక్కిట మొదలుకొని నాయన తగుమహాకురు గూడ సమలగాఁ గృహంబుననే యుండవలయునా ? ఒక్కపోగొడుచును నిక్కడకు రాకూడదా ? నేనంత పాపిష్ఠురాలనా యేమిటి ?

చారు—అమ్మా ! పాతనాటబ్రకిసివి ! నాకామె యొకటియు నీవొకటియునా ? విధవనెంబున భర్తగొలపోయి, బిడ్డలగొని నేని గీలిం జేరితిని. ఎన్నడును వాచుచున్నను నొకచున్నను నననేమోయెఱుంగని దానచు, అట్టియెడల నెచ్చటికిఁబోవలెకును సిగ్గము. అంతకంటె మహామియుఁ గారణములేదు.

సుందరి—పాపము బెదతకముచూడ భాగ్యదశకు రావచ్చును గాని, భాగ్యచతులు దరిహర్త మెలాగుట బహుళక్షము. అయినను నీవు నామొదల న్నొక సంతయంబును న్నెచ్చటాద నవసరములేదు.

చారు—నేను మీగృహంబు నుండుట స్వంతగృహంబున నున్నట్టి భావింపుచుంటిని.

సుందరి—ఈ యానాటఁ జెప్పుడును ఏచోక దిగనేదిగిగు. (కుమారునిఁజూచి) ఆనాదా ! నే నెత్తుకొందును. ఇటురమ్మ. (చేయ జాపుచున్నది.)

చారు—వెళ్ళుము. మీపిన్నమ్మ పిలచుచున్నది.

ఆనంద—(వెళ్ళక యూరికుండును)

సుందరి—నాయనా ! మీయమ్మ నాదగ్గిఁకు వెళ్ళవద్దని చెప్పినామేమి ? రమ్మ. నీకేమియు భయములేదు. (బలవంతమున నెత్తుకొనును.)

చారు—అమ్మా! ఇంక పోవలయును. కమల కూడా నానికై కేకలువేయుచుండును.

సుంద—ఇంతలో కొందర యేమున్నది. నాముద్దు చుంకినవి చెప్పినచో గమల నిన్ను విడిచిచూడనేమి? (ప్రక్కజూచి) వర్మదా! వర్మదా! (అని కేకలువేయును.)

వర్మద—(ప్రవేశించి) అమ్మా! ఏమిసెలవు?

సుంద—మియునులేదు. గదియగుండు చెడమీద రెండుపండ్లున్నవి. ఆహారమునకు దెచ్చియున్నవి.

వర్మ—(అమ్మమించి నంటున ప్రవేశించి) ఎవరో. (గతి పండ్లనిచ్చును.)

సుంద—అబ్బే! మిగుల ముప్పుపోయినది. ఇంతలోకూడవున్నవి? పోవితే. నేను వచ్చుచున్నాను. (చారుమతిజూచి) చారుమతీ! లోపలికిరమ్మ. (అందఱును స్మరింపఁతురు.)

రంగము:—[కమలగృహమున నొకఁడగు జగముఁ ప్రవేశము.]

చారు—(అనలో) హా! పరిమేష్వరా! నన్నెన్నివిధములఁ గష్టములఁ బెట్టదలచితివోదా!

చ. పతిగతియొపగామిగుల ♦ వంతులవలన; సీదీయున్న నా
సుతుసుతుల జగంబునను ♦ జూచెడిభౌగ్యమువేకయున్న; ని
గతిజనుడొచ్చి లుచ్చుటను ♦ కాలమువెల్లంగఁ గీయుచుండ; ని
వెతఁగలుగంగఁజేసితివె ♦ వృక్షవి నిదను సూర్చితివేకటా.

అయ్యో! నేనేమని శోకింతును. యానందమునకే సమయంబునందో సవ తిత్తల్యగు సుందరి యేసమయంబునందో విషముబెట్టి యానందము నాపైఁబెట్టినది. సుమతియు, గమలయు నియ్యది నావలన జరిగినదే యని దూషింపుచున్నారు. (సుందరి నడవఁచి) సుందరీ! సీవంతు

దోహకార్య మొనర్చితివి? నేనేమి నీకపకారి మాచరించితిని! యీ
నింద నాపై నేలమోపితివి?

తే. గీ. సంతలేకున్న నా భగ ♦ వంతుఁగూర్చి
వేడుకొనియైన; లేకున్న ♦ బృద్ధిసురుల
దానముల దన్నియైనను ♦ ధరణిమందు
గాంచవలెఁగాక యీరీతి ♦ గలుషమతిని
సవతిబిడ్డకు విషమిడి ♦ చంపనగునె.

ఈ దుర్యశబంది బ్రహ్మకుటకన్న మరణించుటయే మంచిదికదా. అట్లు
నర్చితివేని నాకేకష్టములును లేకయుండును ఇట్లుదినంబుల నుండియు
జారుమతి మహాసాధ్వి యనియు, సుగుణముల పేటియనియు బలుకు
చున్న సుమతీ చారుమతులే మిప్పుడు నన్ను మహాకూరురాలుగ
భావించి దూషింపుచున్నారు. నేనేమని చెప్పినను నామాట నమ్మరు.
ఇందలి సత్యాసత్యంబులు వారికి వెల్లడించువారెవరు! మహారాజాధి
రాజునకు భార్యనైన నేనెట్లు దుర్యశంబు పాలగుచుంటిని.

(తెరలో)

హా! కుమారా! మమ్ముల విడిచిపోయితివా! మూఁకిక నేమిదిక్కు?

చారు—(తనలో, సుమతియు, కమలయు దనయునింగూర్చి
శోకింపుచు నిట్లు నచ్చుచున్నారు.

[సుమతి, కమల ప్రవేశించుచున్నారు.]

సుమ—(చారుమతినిజూచి) హా! చారుమతీ! నీవెంతదు
ష్కార్యంబాచరించితివి? ఇక్కుమారునకు విషంబిడుటకు నీకుజేతు
లెల్లఁడను. పసిబాలుండగు వీడు నీకేమి యపకారంబాచరించినాడు.
నేనొనర్చిన మేలున కియ్యది ప్రత్యుపకారనూ?

తే. గీ. అడవియందునఁ బులివారఁ ♦ బడగనున్న

తేని నిన్నురక్షించి, చి ♦ తంబునందు

గరుణవహించి; ప్రేమతోఁ ద గన్న బిడ్డ
పగిది వీక్షింపుచున్నాడఁ ద బాపచిత్త.

భూపాలసతివైన నీవు విధివశంబున నిట్లయితివి కదాయని తలంచి నీకే
విధమగు కొఱంతయు గలుగకుండ నాగృహంబున నిన్ను సాకు
చున్నందులకు, “దిన్నయింట వాసంబు నెన్నుపగది” నాకుమారుని
పాలిటికి మృత్యుదేవతవైతివి? అయ్యో! ఎవ్వరైనను జూచినంతనే
యిబ్బాలుని ముద్దుఁగొందుకే. అట్టియెడల నీతని జంపుటకు నీకుఁజిత్త
మెట్లు సమృథించినది?

కమ—పురాత్మరాలా! బిడ్డలగన్నదానవగు నీవు పుత్రవా
త్సల్యమన నెట్టిదో యెఱింగియుండియు నిట్టి దారుణకృత్యంబుఁ జేసితివి?
దీనివలన నీవందులాభమేమున్నది? నీబిడ్డలు నీకుఁ గనబడకుండిరని
నీవెంతగాఁ బరితపించుచుంటివి? అట్లే యెరులుగూడ చింతింతురని
నీకుఁ దెలియదా? కులవిస్తారకుండైన పుత్రుంజంపి నాకు గర్భశోకం
బుగలిగించితివికదా? (కుమారునుద్దేశించి) హా! తనయా! చరణంబు
లనున్న గజలు ఘల్లుఘల్లునిమోయ, నెత్తుకొమ్మని పరుగుపరుగునవ
చ్చి నన్నుఁ గౌఁగలించుకొనినప్పుడు నిన్నెత్తుకొని ముద్దాడు భాగ్యం
బంతరించినది. చిలుకలకుం బలుకులనేర్పు నీముద్దుపలుకువిని యానం
దించు సంతోషం బడుగింటినిది. తుమ్మెదతెక్కలవంటి నీశిరోజంబు
లకు సంపదగిరూపెరాసి దుష్ప్రకారక నశించినది. అక్కటా నిన్నీపా
పాత్మురాలగు చారుమతి నధించి తనపొట్ట పెట్టుకొనినది.

సుమ—మానినీమణీ! మన మరణాంతంబు మన కిన్నినిశ్చ
యములు పోయునని యెప్పునిపై నాసపదయింటినినో, యట్టికుమారుని
మింగి మారుమాటాడక నిలచియున్న యీ చారుమతిం జూచి
నచోఁ బంచమహాపాతకంబులును సూభవించును.

చారు—పుణ్యమూర్తులయిన యోదంపతులారా? ఏలమీరీ
తినన్ను దూషించెదరు?

తే. గీ. నిజము, వైవమెటుంగును ♦ నీరుపల్ల
మెటుగు; బాలుఁ జంపితి నంచు ♦ నిట్లునన్ను
సత్యమరయక దూషింపఁ ♦ జను నెమీకు
సఖిలసాక్షియైనట్టి యా ♦ హరుఁడులేడె.

ఇతి గత్యుంచె. బిడ్డలబాడయా దెలియకుం డెను. దిక్కులేనిదాననగు
నన్ను మీరు రక్షింపుచుండిరి. బిడ్డలఁగన్న దాననగు నేను పుత్రప్రేమ
లతను నాహృదయంబునుండి గోసివేసి నాచేతులారఁ బెంచుచున్న
మీకుమారుని జంపుదునా? మీరు నాయండుఁ గృపవహించి సత్య
మునారయుఁడు. (తెరలో)

మృతిఁజెందినాడని తలంచిన మనయానందుఁడు వైద్యుఁడుపోసినయా
షధంబుచేత విషంబు గ్రక్కి యించుక కన్నుదెఱచినాడు.

సుమ—ఏమీ! కుమారుఁడు విషంబుగ్రక్కి కన్ను తెఱచి
నాడా! ఏమీ! మాభాగ్యము? (కమలనుజూచి) సతీ! ముందుగా
గుమారునియొద్దకరుగుదము. ఈపాపాత్మురాలింగూర్చి యావల విచా
రింతము (కమలతోనిష్క్రమించును.)

చారు—(వైవంబునుద్దేశించి) హా! పరమేశ్వరా! ఎట్లయినను
నాకుమారుఁడు బ్రతుకునట్లు చేసినాకీ యపవాదఁబాపుము. నీపుత్రపు
నా కెవ్వరును దిక్కులేరు.

[రాజభటులు ప్రవేశింతురు.]

రాజ—(చారుమతింజూచి) సీవేనా! సుమతి కుమారునకు
విషముపెట్టినదానపు. పదపద. రాజుగారి సముఖమునకు—

చారు—హా! ఇదియేమిగతి?

(రాజభటులు చారుమతిని గొనిపోవుచున్నారు).



రంగము; రాజసభా మందిరము ముందు:—

[కామపాలుడను సేనకుడు పోవేళింపిన.]

కామ—(తనలో) ఎక్కడనిన్ను త్రొక్కివేడికి బుణంపుందో యెవ్వరికీ తెలియదుకదా? ఈ కనకవర్మ యెక్కడివాడో ఇక్కడకు నిరుపేదలాగునవచ్చి ఈరాష్ట్రానికి రాజైనాడు. అయితే సేనాకబాళు ధర్మంగా పరిపాలిస్తున్నాడు. బుద్ధిమంతుడు. తగాదాలు విచారించడంలో మంచి నేర్పువుంది. (ఇంచుకీయూరికుండి) అన్నా! మఱచిపోయినాను, రాజుగారు యీవాళ పెంద్రీకాళే సభితుస్తారు కాబట్టి ఆసనాలన్నీ సిద్ధం చేయాలి. ఒక అడమనిషి రామనగరిలో ఉన్న సుమతి కొడుకుకు విషం పెట్టేందట. కుర్రాడుమాత్రం బ్రతికినాడట. ఆ తగాదా రాజుగారు యీవాళ విచారిస్తారు. ఇంద్రూ వస్తారు.

(ఆసనములన్నియు వాటివాటి స్థానంబులయందు బెట్టుచున్నాడు.)
(కనకసేనుడు మంత్రియగు సునందుడగు యాసేనులగుచున్నారు.)

(16) పాట. కన్నడరాగము - ఉప్పా - ఏకతాళము.

ప॥ సచివాసునదనా యేమనంగ నాదము యిదిసంబున.

అ॥ ప॥ విచిత్రగతి జరియించుచున్నది ఈదోషారోపణవిన్నది మొదలేమిహేతువో కుడికన్నదగుచు నామనంబు నాహ్లాదమునకబడె॥ సచి॥

కన—మంత్రి! సునందా! ఈదోషారోపణ నిగుల విచిత్రముగా నున్నది. అసుమతి గ్రహంబున నున్న యా స్త్రీయీతని కుమారునకు విషంగిడునంతటి యవసరం బేమివచ్చినది?

సున—రాజేంద్రా! ఇయ్యది నాకుఁగూడ నచ్చుతము గలుగఁజేయుచున్నది. విచారణ యెత్తుకొనఁగూని ఇందలి సత్యా సత్యములు బయలుపడవు.

కన—సచివాగ్నిశ్రీ? ఆసుమతికి నిరుప్రభుభార్యలు కలరని వినియున్నాడ; రెండవ భార్యనుకూడ రావలయునని యాజ్ఞాపత్రికఁ బంపియుంటివికదా?

సునం—పంపియుంటిని.

కన—(సేనకునిజూచి) సేనకా! ఫిర్యాది యగు సుమతి వచ్చి యుండెనేమో పిలుపుము.

సేన—(బిగ్గరిగా) సుమతీ! సుమతీ! (పిలుచుచున్నాడు)

సుమతీ—(ప్రవేశించును)

కన—(సుమతినిజూచి) సుమతి నీవేనా?

సుమ—చిత్తము.

కన—నీయభియోగమేమిటి?

సుమ—దేనా? చారుమతియను నామంబున నొప్పు నొక కాంతనాకుమారు నరయుచు నాగృహంబున నుండెను. దిక్కులేనిదగుటచే నేనామెను బోషించుచుంటిని. ఏమి దుర్బుద్ధిబుట్టెనోగాని పసి కూనయగు నాకుమారున కామె విషం బిడనది. భగవత్కృపచే నాతడు బ్రదికినాడు. దేనా! ఇట్టి యకార్యం బాచరించినయామెను విచారించి న్యాయ మరచి క్షౌంపకపోయినచో కాంతలంద్రిట్టి యకార్యములుప్రబలుచు.

కన—(సేనకునిజూచి) సేనకా! చారుమతినిబిలుపుము.

సేన—చారుమతి! చారుమతి—(అని గట్టిగాఁ బిలుచును)

చారు—(ప్రవేశించి నిలచుండును)

కన—(చారుమతినిజూచి తనలో) ఏమిదీ! వింతగానున్నది?

తే. గీ. అతివ నీమెనుగన్నంత, † నమ్మగన్నఁ

చందమునఁ దోచుచుండెను † స్వాంతమునకు

నగునుకాబోలు మాయమ్మ—(అలోచించి)

♦ యెనయెడల

నిట్టి కార్యంబు సేయునే ♦ యెన్నఁదైన.

ఇది వట్టిభ్రమ. (అలోచించి) పేరుగూడచారుమతియె. హృదయమా శౌందర పడకుము. (చారుమలింగుని) ని పేరేమి? సీవ్వెరవు?

చారు—(తనలో) ఏమిటి ! ఈ నృపాలుని కంఠస్వరంబునుకూ పంబును జూడ నాతనయుప సాపకమునకు వచ్చుచున్నాడు. (యోజించి) నేనెంత వెర్రినైతిని. నాకుమారుని బ్రహ్మకీయునినా? బ్రదికి యుండినను సమస్తసంకదలును విడిచిన యాలో! పదవి నెట్లధిష్ఠించును. మనుజుని బోలు మనుజులుండరా? (ప్రకాశముగా) రాజేంద్రా! నేనె వ్వొనైన సేమి? ప్రస్తుతమిట్లుంటిని. నాపేరు చారుమతి.

కన—నీపై నీసుమతి తనకుమారునకు విషము బెట్టితివని యభి యోగము దెచ్చినాను. ఇందులకుగూర్చి నీవే ప్రత్యుత్తరంబిచ్చెదవు?

చారు—రాజా! నెప్పుటకేమున్నది. దిక్కులేనిదాననైననీ సుమతి కన్నకూతురు చందంబున రక్షింపుచున్నాడు. ఈ సుమతికు మారుని నే నెప్పుడును జగకడింపకుండ నాడింపుచుంటిని. ఇట్లుండ నొక్కదినంబున గుమారుని నెత్తికొని సుమతి రెండవభార్యయగు సుంద రిగృహంబునకుఁ బోయితిని. ఆకమలయు గుమారుని నెత్తికొని, లాలింపుచు లోపలికింగొనిపోయియతనికి కడఁగలమొకటియొక గింజి. ఇదిద ర్శిఫలంబు గుమారుడు భుజించిన యొకగింజియకుఁ గన్నులు మూసినాడు. ఇంతకుతప్ప నేనేమియు నెఱుంగను. ఇందలి సత్యాస్యంబులనరసి దోషురాలనని నీకుఁ గోఁచెనేని శిక్షింపుము. వేయేల?

తే. గీ. తనయునకు విషమునిడితి ♦ ననెడువారు

నెత్తిపై నెక్క నే యెక్క ♦ నేనుబ్రదుకఁ

జాల; నీదుఖమ్మన శీ ♦ ర్నంబుజెండి

పుణ్యమును గట్టుకొమ్మింక ♦ భూపవర్య.

సునం—సాస్వమణీ! మారాజంతటి నిర్దయుండుకాదు. న్యా
యాన్యాయవిచారణపట్టియు.

కన—(మంత్రిగజూచి) సచివా! వింటివా! ఈమెమాటలు
కానిమ్ము. (సేవకునిగజూచి) సేవకా! సుచుతి పెద్దభార్యయగుకమలను
బిలుపుము.

సేవ—కిమలా! కిమలా! (పిలచుచున్నాడు.)

కమల—(కుమారునిసహితంబుగా బ్ర)వేశించుచు)

కన—(కమలచు జూచి) ఈగుమారునకేనా చారుమతి విషమ
డినదని దోషారోపణము చేయఁబడినది.

కమ—అప్పుచు.

కన—నీసవతి పేరేమి?

కమ—సుందరి.

కన—సేవకా! సుందరిని బిలుపుము.

సేవ—సుందరి? సుందరి?

సుందరి—(ప్రవేశించి తనలో) అక్కటా! రచ్చకెక్కవలసి వ
చ్చెనుగదా! తుదకియ్యది యెట్లుగా బరిణమించునోకదా.

కన—(కిమలచుజూచి) కమలా! నేనడుగు ప్రాంతంబులకు సరి
యైన ప్రత్యుత్తిరంబు లిమ్ము. ఈసుందరియు నీవును సఖ్యముతోడనే
వర్తింపుచుండురా? లేదా?

కమ—రాజేంద్రా! సవతులలో నెకరిపై నొకరి కీర్ష్యయుండు
ట సహజమని నీకుఁ దెలియకయుండునా?

కన—అమె యింటికి నీవును నీవామె యింటికిని బోవుట యెప్పు
డైననున్నదా?

కమ—లేదు.

కన—(సుందరిని జూచి) సుందరీ! ఇయ్యది నిజమేనా?

సుంద—సత్యమే.

కన—కమలా! తఱచు సుమతి యెవ్వరిగృహంబుననుండును?

కమ—సుందరి గృహంబుననే.

కన—నీకుమారుం డెప్పుడయినను సుందరిగృహంబున కిరుగు వాసుక కలదా?

కమ—ఎన్నఁడును లేదు.

కన—(చారుమతిని జూచి) చారుమతీ! నినొక దినంబున గు మారుని సుందరి మందిరంబునకుఁ గొనిపోయినంటినే. ఏకారణము వైఁ గొనిపోయితివి?

చారు—ఎత్తుకొని యాడింపుచుండ గృహద్వారంబున సుందరి నిలచుండి చన్నురమ్మని పిలచినది.

కన—(సుందరిని జూచి) సుందరీ! చారుమతి పలికినమాట సత్యమేనా?

సుంద—నిజమే.

కన—నీవీకుమారుని లోనికిఁగొనిపోయి కదళిఫల మిచ్చితివా?

సుంద—నే నీయలేదు.

కన—చారుమతీ! ఇంతకు పూర్వము బాలునకీమ కదళిఫల మిచ్చెనని చెప్పితివే.

చారు—అవును. వచ్చియురాని మాటలతో నీశాసనము నా లోచెప్పినాఁడు.

కన—(బాలునిజూచి) బాలకా ఇటురమ్మ.

అనందఁడు—(రాజును సమీపించుచున్నాఁడు)

కన—(చారుమతిం జూచి) చారుమతీ ! నీవీకుమారునిఁ బిలుపుము.

చారు—అనందా ! ఇటురమ్ము.

కన—సుందరీ ! నీవు పిలుపుము.

సుంద—కుమారా ! ఎత్తుకొందును రమ్ము.

అనం—పో. నేనురాను. నువ్వు చేదుపండు పెత్తావు. మొన్న పెత్తావు.

కన—ఇక్కడ జాలును. ఈయభియోగ మింక విచారింప నవసరములేదు. సత్యము బాలునివలన నే వెల్లడియైనది. నాటిదినంబున విషపూరితబగు కదళిఫలంబు సవతియందుండు నీర్వచే నీసుందరి కుమారునకొసంగిన సంగతియే నిశ్చయము. (సుందరిని జూచి) సుందరీ ! ఇందు నేరిస్తురాలవు నీవని మాకు సంపూర్ణుఁ డోచినది. కాదని నీ వింక నెన్ని చెప్ప దలంచుకొన్నను నమ్మము. కుమారుఁడు జీవించియుండిన కారణమున నీకు శిక్ష తగ్గినది. మూడు సంవత్సరములు నీవుకారాగృహంబున నుండవలయును.

సుంద—కష్టము. కష్టము.

సుమ—(సుందరిని జూచి) ఓసే ! దురాత్మురాలా ! తలగడక్కింద తాచువలె నీవు నాకు దాపరించితివి ! ఇట్టిదానవని నేనెన్నడును తలపోయలేదు. నీవేకుమారునకు విషమిచ్చి సాధ్వియగు నీమెపై యకారణనిందమోపితివి. భార్యయుండగా న్నొండుభార్యనుగైకొన్న నాకు దగినబుద్ధి వచ్చునట్లు జేసితివి.

కన—(నేవకుని జూచి) నేవకా ! ఈసుందరి నిచ్చటనుంచి తీసికొనిపోమ్ము.

సేవ—వాతఫలమున కెవ్వరేమి సేయుదురు. రమ్ము.

(సుందరిని దీసికొనిపోవుచున్నాఁడు)

సుమ—(చారుమతం జూచి) తల్లీ! చారుమతీ!

తే. గీ. నావత్తి యిరీతి నొ ధ నర్చెనంచు
దలపజాలక యట్టి నిం ధ దాభరంబు
సేపయిం బెట్టినాడ మ ధ నించినన్ను
రమ్ము నాగృహంబునకును ధ రమ్యకృపను.

చారు—అయ్యా! ఇందు నీవుచేసిన దేమున్నది?

కన—(తనలో)

తే. గీ. అచ్చుగ్రుద్దికట్లుగడె మా ధ యమ్మమొగము
నిమె మొగ మొక్కతీరుగా ధ (అలోచించి) నీమెనాడు
తల్లి; సంశయింపఁగ నేల ధ ధాత్రీయందు
సంచరించుటంజేసి శు ధ స్మించియుండె.

ప్రకాశముగా) సాద్యమణీ! నిన్నుజూచిన నాడెందంబున మిగుల సం
దియంబగుచున్నది. కావున నీనిజమైన యుదంతం బెట్టిగో వచియించి
నాకు సంతసము నింపుము.

చారు—(తనలో) ఏమోగాని యీతనిజూచిన నాకుమారు
డని తోచుచున్నది.

మ. ఇతఁడే పుత్రుఁడు నాకు సందియము లేకదిం తేనియున్ నాడు మ
ర్మతి, కూర్మండల దుష్టబుద్ధి వధియిం ధ పంబంపఁగానెట్లొ యీ
యతిన్ పుణ్యమజూపి తప్పకొనినాఁ ధ డగచున్ ముదాబార నా
మతినూహించెద; (ఇంచుక యూరకుండి) యల్లెయకాను; సుత
యే ధ మార్గంబునంబోయెనో.

(17) పాట. సురటరాగము - ఏకతాళము.

ప॥ యేమని వచియింతున్ నీలోడను తండ్రి.

ఆ॥ ప॥ నామహా యాపదల్కిట్టివి యని నెల్లవాపోవుదు॥ యే॥
 ఈమహీచక్రమేలు రాజచంద్ర భార్యను నానోముఫలమువ
 లన యిటులనాకర్మము కాలిపోయె॥ యే॥

(ప్రకాశముగా) నాయనా! నాయుదంతం బేమని చెల్పుదును. నాకథ
 యంతయుఁ గప్రలొక గ్రంథముగా వ్రాయవచ్చును. నాదీనచరిత్ర మే
 మని తెలుపుదును.

తే. గీ. మఱదిచేతను భర్త చం ♦ పంగఁబడియె
 బిడ్డలేదానినో వారు ♦ వెడలినారు
 బహుళదుఃఖింబుఁ బొందుచుఁ ♦ బఱగుచుండి
 బ్రదికియుంటిని జీవచ్చ ♦ వంబనగుచు.

కన—(తొండిరగా సింహాసనము దిగివచ్చి చారుమతిం జూచి)
 అమ్మా! అమ్మా.

చారు—కుమారా! కనకవర్మా! (కొగలించుకొని యిరువురు
 ను మూర్ఛబొందుచున్నారు)

సునం—(తనలో) ఏమి! వింత!

కన—(మూర్ఛబెలిసి లేచి)

సీ. మఱదియొనర్చుదు ♦ స్వార్థకృత్యమునకు
 నతిభయంబంది యె ♦ దరిగితమ్మ
 కన్నబిడ్డలఁబాసి ♦ యెన్నెన్నెకప్టంబు
 లొందుచు నెచ్చోట ♦ నుంటివమ్మ
 సుకుమారివగు నీవు ♦ సుమతియింటను నెల్లు
 దలఁదాచుకొంచును ♦ నలరితమ్మ
 పతిఁబాసినట్టిదు ♦ ర్భరశోకమును మిగి
 ధైర్యమేరితిని ♦ దాల్చితమ్మ

తే. గీ. తల్లినికథనొక్కింత ♦ దాచకుండ
బ్రాకటంబుగ వినివింపు ♦ నాకునిపుడు
నేను గనకసేనుడదల్లి ♦ నిక్కముగను
మొక్కువాడను మఱియింత ♦ మొక్కువాడ.

తే. గీ. అతిదరిద్రమందున ముట్ట ♦ నట్టనరుడు
మార్గమునద్రవ్యమును గన్న ♦ మాడ్కి;నర్థ
రాత్రిసమయంబునంగు న ♦ రణ్యమందా
జ నెటిపాంధుండుదీపంబు ♦ గనినకరశ
నాడుడెంతము మిగులయా ♦ నందమంద.

చారు—వత్సా! కనకసేనా! బ్రదికియుంటినా తండ్రీ! ఈ
నిర్భాగ్యురాలికెంతటి యదృష్టముపట్టినది!

తే. గీ. తనయ! నీముట్టుచెల్లెలు ♦ తారయేది!

కన—(తనలో)అక్కటా! ఏమనిచెప్పుమిను. (ప్రకాశముగా)
అమ్మా! అరణ్యంబున మేమిరువురమును విధివశంబున వేరువేరుతో
వలం బట్టితిమి.

చారు—

మామె యేదారిబోయెనో ♦ యరసిసావ
యెన్నికడగి స్తలగుఱచునో ♦ యెవ్వరెఱుగు
బ్రదికియన్నచోలేదొకో ♦ మదినిడలఁప.

కన—తల్లీ! తారంగూర్చి నీవు చింతింపకుము ఆమెబ్రదికియు
న్నదని నేనువినియుంటిని. సత్వరముగ నే యామె జూడల నారసి
హొని వచ్చెద.

సుమ—(కనసేనునిం జూచి)

మ. ధరణీపాలక; నీదుతల్లియనిచి ♦ త్తంబాదుభావింపకా

కరణిః మత్సుతురక్షణంబునకు న్న ♦ కాంక్షించిత్తోడైచ్చి;యా

పరిచర్య నియమించి నాడనతిపాఁ డ పాత్మ్యుడగాతియ్యఁడన్
గురితంబున్ గృహఁగావవే యిపుడు ని డి న్ను పేడెదన్ భూవరా.

మఱియు రెండవభార్య పలుకులవిని నిష్కారణాభి యోగింటి
మెపై దెచ్చితిని. మన్నింపుము.

కిమ—(చారుమతిజూచి) అమ్మా! చారుమతి! ఎఱుఁగక
నీయెడల మేమొనర్చిన యపరాధంబుల క్షమింపఁగోరెదము.

చారు—పూజ్యులగు నోదండతులారా! కయభియోగంబు
కారణాంతరములచే నచ్చవది. మీరు నాకిదిశ్రీమ యేమున్నది?
మీరు నాకొచ్చిన మహోపకారణమునకు జన్మజన్మముల కయినను
మీముణము నేనుదీర్పజాలను.

(తెరలో గలకలము.)

కన—(సేవకునిజూచి) సేవకా! ద్వారముకడ నాకలకల
మేమో చూచిరమ్ము.

సేవ—చిత్తము. (నిష్క్రమించి వెంటనేప్రవేశించి) రాజేం
దా! పాండ్యదేశపు పౌరులట. దేవరదర్శనార్థమై వచ్చినారు.

కన—లోపలికి రానిమ్ము.

సేవ—చిత్తము. (నిష్క్రమించి మరల పౌరులతో ప్రవేశము.)

మొదటిపౌరుడు—(రెండవ వానింజూచి) ఇడుగో మన చిత్ర
సేనుని కుమారుడు. కనకవర్మ (రాజుంజూచి) రాజా! మమ్ములను,
రాష్ట్రమునువదలి యిచ్చటనుంటివా? శ్రీమహాదీ సీజాడదీసి యిట్లువచ్చి
నాము. దుష్టబుద్ధిపరిపాలనంబు మిగుల క్రూరంబుగా నున్నది. రాజ్యం
బు విడిచిజనులు పోవుచున్నారు. నీవు కడురయంబునవచ్చి యాదుర్మార్గుని
నుక్కడగించి, మమ్మును రాష్ట్రంబును బాలింపుము.

కన—పౌరులారా! మీరుపొండు. నేను రెండుమూడు దినం

బులలోనే యచ్చటి కరుదెంచి కార్యముచక్క బెల్లెదను. నారాక
బురంబున నెవ్వరికినిఁ దెలియనీయక యుండును.

పౌరులు—చిత్తము. (నిష్క్ర.)

కన—(మంత్రిగిజూచి) మంత్రి! వింటినిగదా. ఇంక మనమా
ప్రియత్నంబున నుండవలయును. (సుమతింజూచి) సుమతీ! సిప్రమాత
ల్లికొనర్చిన మహిమకారగబు మఱువజాలను. నాగృహంబునమీరు
కొన్నాఁగ్గుడవలయునని నాకోరిక.

సుమ—రాజేంద్రా! నీమాటకెమరాడ జాలము. నీవాదుష్ట
బుద్ధిని దండించి నిరాజ్యమునకు బట్టిభిక్షుడు వగు సమయంబున
మేము తిప్పకయరుదెంచెదము.

కన—ఇందులకు మీరు తిప్పవలదు.

సుమ—ఇంక మాకనుభవించుడు. (సుమతి, కమల-ఆనందము
నిష్క్రమింతురు.)

కమ—(చారుమలింజూచి) అమ్మారమ్మ. భోజనమునకునీకు
బోదెక్కుచున్నది.

(అందఱును నిష్క్రమింతురు.)

ఇది చతుర్థాంకము.





సంగీతకనకతార.

రంగము, — పాండ్యదేశము.

—

రంగము: — పాండ్యదేశము.

[దుష్టబుద్ధి—విశారదుడు ప్రవేశము.]

దుష్ట—మూత్రీ! విశారదా! మాయన్నభార్యయగు చారుమతి యప్పుడుగంగలో బడుటకు బోయినది. పల్లెవాడొక స్త్రీ నదిలో బడగాఁదీసెనని నాకు వినియుంటిని. ఆసంగతి యేమయినఁదెలిసినదా?

విశా—(తనలో కూర్చుండగు సీతేశింకను వారిపై చలము మానలేదుకదా. మీదుష్టతనము మానుకాలమెప్పుటికీ వచ్చునోకదా! (ప)కాశముగా) ఏమియుఁ దెలియలేదు.

దుష్ట—సచివా! కనకసేతుడును, దారయుఁగూడ నరణ్యంబునకు వధిపబడుటకుఁ బంపఁబడిరి. వారింగూర్చి నాకావంతయు సందియములేదు. కాని, చారుమతి నిశ్చయముగా జీవించియుండనేని యామెను రావించితీరవలయును.

విశా—దేవతకింత యాగ్రహమేల? జరిగినదేదో జరిగిపోయినది. ఇంతచలముతగదు. (తనలో) ఈదురాత్ముడు కనకవర్మ మరణించెననియే తలంపుచున్నాడు. నిన్న దేశదా పౌరులు నాకడకు రహస్యముగా వచ్చి కనకవర్మనుఁజూచి వచ్చితిమనియు నాతడు సత్వరముగనే వచ్చి రాజ్యమంతయుఁ వశము జేసికొనుననియుఁ జెప్పిరి.

(తెరలో)

త. గీ. అన్ననువధించి తద్భార్య ♦ మైననాడు

తల్లినిగూడగా నెంచి ♦ దయనువీడి

మమ్ములవధింపగా నర † ఇమ్మునకును
బంపుదుష్టుడెచట నున్న † వాడొచ్చెపుడ.

విశా—(తనలో) కనకవర్మయే కాబోలు వచ్చుచున్నాడు.

(తెరలో ధ్వని.)

దుష్ట—విశారదా! ఎక్కడనో రణదుందుభి వినవచ్చుచున్నది.
అది యెయ్యదియో యొక్కింత యరయుము.

విశా—(నిష్క్రమించును.)

దుష్ట—(తనలో) ఇప్పుడు నాపైకి యుద్ధమునకు వచ్చువారెవ
రుందురు. (అటునిటుజూచి) సంగతి సరయుటకుఁ బోయిన విశారదుం
డింకను రాలేదేమికారణమోగదా!

(ఖడ్గధరుడై కనకవర్మ పంపేళించును.)

(18) పాట. మోహనరాగము - ఆటతాళము.

ప॥ ఓరిదురాత్మా! ఓరీకృరా! యోరీపాపీ యోరీ దుష్టబుద్ధి
దిగరా గడె.

అ॥ ప॥ కృరా నన్నుజంపఁ | ఘోరాటవిక్రీ బంపఁ బుచ్చితిమని
యా నీకీముచ్చట॥ ఓరీ॥

కస—(దుష్టబుద్ధినిజూచి) ఓరీ! దురాత్మా! దుష్టబుద్ధీ!

తే. గీ. కనకవర్మను నేను;నఁ † గాననమునఁ

జంపఁబంపవెతారతో † జావలేదు

దైవకృపచేత జీవించి † ధరణియందు

నిన్నుఁగూల్పవచ్చితి నేడు † సీచహృదయ.

పనీవాండ్రమగుటచే నప్పుడట్లు చేయఁగలిగితివిగాని నేడెందుబోగల
వు? ఏకగర్భజనితుండగు నన్నును బలవంతంబునఁ జంపి, కన్న తల్లి
ప్రమానయగు తద్భార్యను హరింపఁదలచి, మమ్ము వధింప బంపినన్ని

రణంబున ఖండించి శరీరంబు నింతింతలుగాఁ జేసి పక్షులకు వైచినను పాపములేదు.

దుష్ట—(తనలో) ఈతనిని నాడు కింకరు లరణ్యంబున వధింప లేదుకాబోలు. గుడ్లువచ్చి పిల్లను వెక్కిరించినదనునట్లు వీడెంతలో నెంతవాడైనాడు. కానిమ్ము. (ప్రకాశముగా) ఓరీ! నీవన్నకుమారుఁ డవయిన నగుదువుగాక (ప్రకాశముగా.)

ఉ. ఎందుల కేగుడెంచితిటు ♦ వేటికి బోలెను కాఱుకూతలొ
మందమతీ! యెకింతయును ♦ మానసమందున భీతిలేక నా
డెందుకొచావకుండఁగను ♦ నెట్టులొ బోలివిగాని నేడునిన్
మందఁగఁజేయువాడనను ♦ మానముబూనక ; యోరిడింభకా.

. కన—ఓరీ! తులువా! ఈ కనక సేనుండు పూర్వపు గనకసే నుండని భావింపకుము.

మ. అనిచేబూనితి నిల్వమియెదుట ను ♦ ద్యత్యైర్యమేపారఁగా
మసిగాజేతు శరాగ్నివైచినినుడు ♦ ర్ధార్ధంబునం దండ్రినిన్
వెనఁజంపంగ సహించినానపుడు దో ♦ ద్వీర్యంబులేకుంట నా
కసిదీర్తున్ ప్రజలెల్లజూడఁగఁగ్రత ♦ ఘ్న సత్కుల ధ్వంసకా.
(క త్తిద్రిష్టచున్నాడు.)

దుష్ట—నీప్రగల్భవాక్యంబులఁ గట్టిపెట్టుము. (ప్రక్కకుదిరిగి చూచి) ఓరీ! సేవకా!

కన—ఓరీ! నీకింకను సేవకులు బలుకుదురా! ఇంక నీమాట వినువారిచ్చట నెవ్వరును లేరు. ఇంక నీశరంబు నాకరాసి కెఱగా నిచ్చుటకు సిద్ధముగా నుండుము.

దుష్ట—ఏమిరా! నీకండకావరము. ఇదిగో! నీపొంగడగించెద ను. రమ్మ—

(ఇరువురును యుద్ధమునకు మొనయుచున్నాడు.)

కన—(దుష్టబుద్ధిని బట్టుకొని) తులువా ! ఇప్పుడునీవు నాచే
తితో సంపూర్ణముగాఁ జిక్కితివి.

తే. గీ. పాపమంచును దలపక ♦ భావమందు
మాకు నెక్కులుసల్పు దు ♦ రాగ్ధర్మము
కరుణబూనక మొక్కింత ♦ కలుషచరిత !
కఱకుగ త్తిని గంఠంబు ♦ నముకుచుంటి.

(నామకంబోపును.)

చారుమతి—(తొందరగాఁ బ్రవేశించి.)

తరల.

వలచుని వసింప; సత్కృప ♦ భావమందున బూనుమా
తులవబుద్ధిని బూనియెగ్గులు ♦ దుష్టమైన మొనరించిన
దలపఁగా బినతండ్రి మాటలు ♦ తప్పులకు మునుపుచు
విడువమీతని పుణ్యమబ్బెడు ♦ విజ్ఞులెల్లరు మెచ్చగా.

వత్సా ! అన్నగారిని జంపిన నీతనిని గూర్చి జనులెన్నివిధంబులఁ జెప్పు
కొనుచున్నారు.

కన—(చారుమతింజూచి) అమ్మా !

తం. జనకునిగూర్చి యర్థవిశి ♦ సాహసమేర్పడి నిర్ముఁబట్టఁగా
మనమున నెంచి మమ్ములను ♦ మారణ సేయగ నెంచినట్టి దు
ర్జనుడు ధరాస్థలంబునను ♦ జావగఁజూడవ దేమిచిత్రమో
జనని; యఘు బెయైన నగు ♦ జంపకవీడును ముష్టబుద్ధిని.

చారు—తండ్రీ ! నామాట వినుము. పినతండ్రిని వధించినాఁ
డను దుర్యశమావంద్రతారకముగా నుడుచు.

(జయసేనుడు తార ప్రవేశింతురు.)

తార—(తొందరగాఁ బ్రవేశించి) హా ! సోదరా ! ఎన్నాళ్లకు

జూడగల్గితిని. (తల్లినిచూచి) తల్లీ! నన్నొక్కసారిఁ గాగలించు కొనుము.

కన—(తారంజూచి.)

తే. గీ. నీరములను దెచ్చుటకునై ♦ నేనుబోయి

వచ్చుసరికీవచట గాన ♦ వైతి;వకట

భూరిదుఃఖాబ్దిలోపల ♦ మునినాడ

. జెల్లెలాబ్రతికితే మమ్మునీ ♦ ఓంపభువిని.

అమ్మా! ఇప్పుడుమనకు సంపూర్ణ సంతోషము గలిగినది.

చారు—కుమారీ! తారా! నీజెన్ని యిక్కట్ల పాలుబడితి వోకదా.

జయ—(కనకవర్ణంజూచి) కనకవర్మా! నీజాడల నరసి యరసి నీవిట్లరు దెంచుట యాలించి యామెం దోడ్కొని వచ్చితిని. మిమ్ములనందఱు జూడగలిగినందులకు నాకు గల్గుచున్న యానందము నకు మేరలేక యున్నది. నీయగ్రజనియొద్దకు నిన్ను దోడ్కొని పోవు దునని యామెనోజేసిన ప్రతిజ్ఞ జెల్లించుకొంటిని.

తార—అన్నయ్యా! ఈతడునాకుఁ బ్రాణదాన మొసంగిన మహాను భావుండు. అరణ్యాబున కిరాతులచేఁ జంపబడనున్న నన్ను రక్షించి, శనగృహంబునకు దోడ్కొనిపోయి కన్నబిడ్డ చందంబున నర సిన పుణ్యశీలుండు కల్యాణపురాధీశ్వరుండగు జయసేచుడు.

కన—(జయసేనునింజూచి) రాజేంద్రా! నమస్కారములు. నీనిష్ఠేతుక కృప మిగుల వినుతింపఁ దగియున్నది.

(విశారదుండు ప్రవేశించును.

కన—(విశారదునింజూచి) మంత్రీ విశారదా! చిరకాలంబు నకు నిన్ను జూడగంటిని.

జయ—విశారదా ! గనక సేనునిరాకయు లేపటి దినం బీతని పట్టాభిషేక మహోత్సవంబును బురంబునఁ జూటఁ బుపుము.

విశా—మంచిది.

కన—(దుష్ట బుద్ధినిఁజూచి) దుష్టబుద్ధీ !

తే. గీ. అమ్మవాక్యంబులాలించి ♦ యాత్మయందు

భవ్యకృపఁదాల్చి నిన్నును ♦ వదలుచుంటి

యపయశంబుదగావలె ♦ నంచుదలచి

యింక నైనను సర్వబుద్ధి ♦ నెసగుమయ్య.

నీజీవనోపాధికిఁ దగిన దృవ్యంబు నే నొసంగెదను. నీవు నారాజ్యంబున నుండ నర్హుడవుతావు. కావున నీవు నారాజ్యంబు విడిచి నేజే పోవల యును. దెలిసినదా. (చారుమతింజూచి) అమ్మా ! చెల్లెలు పాణింబు లను రక్షించి రుంచిన యీ మహానుభావుని మనము గౌరవింపవల యును. (జయసేనునిజూచి) పాణిబంధూ ! జయసేనా ! రమ్మ.

చారుమతి—కనకవర్మ-జయసేనుడు-విశారదుడు నిష్క్రమింతురు.)

(19) పాట. హిం॥ శోడిరాగము - ఏకతాళము.

ప॥ యింతటిదుర్గతి నాకుఁఘటించునంచు యింతుక నెంచనైతి.

అ॥ ప॥ సుంతయు హృదయమునందు శాంతము లేక యనేకదురితకృ త్యముల్ । అంతములేని గర్వముతోడఁ సన్నితినయ్యా । యింతకాలమున కీ । కనకవర్మ నాగర్వము సర్వము ఖర్వము జేసెను॥ యింత॥

దుష్ట—(తనలో) ఆహా ! కాలమెంతలోమారిపోయినది. అగ్ర జునిజంట రాజ్యంబుంతయు వశంబు జేసికొంటినని గర్వించితిని. అట్టి నాగ ర్వమడగినది. అవును. నాయటి పాపాత్ముడిట్టి స్థితిని బొందవలసినజే. అగ్రజుని వధించి యాతని భార్యను బట్టదలంచిన దుర్మతిైన నాకు దత్తావధలంబులు వింపకతీరునా? ఈ కనకవర్మ నన్ను బురంబు

విడిచి నేడే పొమ్మనినాడు, కానిమ్ము-విధివారిత నెవ్వఁడు దప్పించఁగలఁడు.

(నిష్క్రమించును.)

రంగము:— పట్టాభిషేకము.

(కనకసేతుడు—తార—చారుమతి, జయసేతుడు, విశారదుడు

మొదలగువారు ప్రవేశము)

కన—(చారుమతింజూచి) అమ్మా! దురాత్ముండగు దుష్టబుద్ధి మూలమున మన మెన్ని యిక్కట్లపాలయినను మరల మన రాష్ట్రంబునకు మనము జేరుకొంటిమి! మాతండ్రిగారు రాజ్యసింహాసనము నేనధిష్ఠింపఁగలిగితిని.

జయ—కనకవర్మా! ఇది మాతల్లిగారి కడుపు చలువయని తలంపవలయును.

(పౌరులందరును ప్రవేశము)

పౌరు—మహాప్రభూ! మాకన్నులకిప్పు డానందముగలిగినది. మిమ్ములను తరిమివేసి యాదుష్టబుద్ధి మమ్ముబెట్టిన యిడుమలు చెప్పనలవికాదు. నాయన! నీవాచంద్రతారకముగా మీతండ్రిగారి పాలనంబువలెనేధరణి బాలించెదవుగాక.

కన—పౌరులారా! మీరురహస్యముగ నాకడకు వచ్చి దుష్టబుద్ధికృత్యంబులను జెప్పినప్పుడునే నరుదొచెదనని చెప్పియుంటిని. అట్లానర్పితిని గదా. ఇంక నేమి కావలయును?

జయ—పౌరులకు నీపరిపాలనంబు చల్లగా నుండుటయేక డా కావలసినది! ఇంక నేమికాలెను? అయిన నిట్లగుంగాక.

తే॥ గీ॥ ధరణిసస్యసమృద్ధియై † తనరుగాక

పార్థివలుపరాంగనలకై † పరితపింప

కుండెదరుగాక ! కాంతలీ' యుర్వియందు
సుగుణభూషణులొచును ♦ నెగడగాగ.

(20) పాట. హారతిపాట.

ప॥ హారతిదేగనుగొనుమా అంబా॥ పార్వతీసత్కృపా॥

అ॥ ప॥ హారతిదే జయహారతి సమ్మతితోగొని దయతో మమ్ముల
బోధింపుము॥ హార॥

పరమపావనచరిత హిమవంత । దుహితాదురిత । రహిత ।
మునిజన వినుతా॥ హార॥

నిరతము నెరనమ్మితిమమ్మా । అమ్మల । గన్న యమ్మా మమ్మేలు
హార॥

పంచమాంకము సంపూర్ణము.



ఆంధ్రాబుక్కు-డిపో, రాజమండ్రి



వైద్యగ్రంథములు.

| | |
|---------------------------|------|
| వైద్యశత్రోక్తి టి. తా. | 0 8 |
| అనువాసమంజరి డి. తా. | 0 8 |
| అంబరాజీయము | 0 8 |
| కాగధసంహిత | 3 0 |
| సుశ్రుతశారీరము | 2 8 |
| సేతిద్వీపము | 0 8 |
| ధన్వంతరీవిజయము | 0 8 |
| వ్రణచికిత్స | 0 8 |
| దంతశోధిని | 0 0 |
| ఆంధ్రయవైద్యచింతామణి | 4 0 |
| ఆంధ్రయవౌషధగుదీపిక | 3 0 |
| ధన్వంతరీఋణుండువు | 2 8 |
| బసవరాజీయము | 7 0 |
| చికిత్సారత్నము | 1 4 |
| వైద్యామృతం | 1 4 |
| శ్రీవైద్యచింతామణి 2 సం } | 10 0 |
| పుటములుగలది కొత్తకూర్పు } | |
| పసిష్టపోక్తిము | 1 8 |
| వ్యాసపోక్తిము | 1 8 |
| సర్వోపధగూఢకల్పము | 2 8 |
| నాడిపరిక్షాసము | 0 8 |
| పానీయకల్పవల్లి | 0 4 |
| కలరా | 0 8 |
| చలిజ్వరము | 0 8 |
| అంటువ్యాధులు | 1 0 |
| చంటిబిడ్డ | 1 0 |
| రసవదీపిక టి. తా. | 0 12 |
| భేదజకల్పము | 0 8 |
| శతశైవ్యాపాక్షి ప్రకాశిక | 0 9 |
| మూనానీవైద్యామృతం | 0 12 |

వైద్యగ్రంథములు.

| | |
|---------------------------|------|
| ధన్వంతరీవైద్యచికిత్సాసారం | 0 12 |
| ఆయుర్వేదసారసంగ్రహం | 0 8 |
| స్వరకామ్రము | 1 4 |
| బ్రహ్మవైద్యరత్నాకరము | 2 8 |
| చక్రద్వీప తాత్పర్యంసహా | 3 12 |
| చికిత్సాసారము | 2 8 |
| వైద్యప్రసారము | 0 6 |
| ఆయుర్వేదశాస్త్రవిమర్శము | 1 0 |
| మాధవనిధానము | 3 0 |
| రసేంద్రచింతామణి | 2 8 |
| వాణీకరకల్పధృమము | 1 8 |
| మానవధర్మచంద్రిక | 2 0 |
| షడ్రీపునిఘంటువు | 0 8 |
| సుఖిరోచికిత్సారత్నాకరం | 0 8 |

ఆనందాప్రస్ఫువారి పుస్తకములు.

| | |
|--------------------|------|
| మనుచరిత్ర | 2 0 |
| సీతారామంజనేయం | 3 4 |
| రాఘవహండ్లవీయం | 2 0 |
| సప్తమస్కంధము మూలం | 0 8 |
| డిటా టి. తా. | 1 8 |
| వసుచరిత్ర | 4 0 |
| అమరము మూలము | 0 8 |
| మందరకాండ మూలం | 1 0 |
| రుక్మిణీకల్యాణము | 0 12 |
| గజేంద్రమోక్షము | 0 12 |
| నీతిచంద్రిక | 0 8 |
| ఆంధ్రనిఘంటుత్రియము | 0 14 |
| డిటా క్యాలిఫో | 1 2 |

వలయువారికి న్యాయము:—

మాడేటి సన్యాసయ్య,
ఆంధ్రాబుక్కు-డిపో, రాజమండ్రి.

ఆంధ్రాబుక్కు-డిపో, రాజమండ్రి.

ఆంధ్రానాటకములు.

| | |
|-----------------------------------|------------|
| గయోపాఖ్యానము | 0-8-0 |
| ప్రసన్నయాదవము | 0-8-0 |
| పారిజాతాపహరణము | 0-8-0 |
| చతురచంద్రహాసీయము | 0-8-0 |
| చార్యతీపరిణయము | 0-8-0 |
| బొబ్బిలియ్యుధము | 1 0-0 |
| సంగీత చంద్రాకాంత | 0-10-0 |
| సంగీత శశిశేఖ | 0-12 0 |
| సంగీతపాదుకాపట్టాభిషేకము | 0-12-0 |
| సంగీతపాశుపతాస్త్రానియం | 0-8-0 |
| సంగీతసైంధవాస్త్రానియం | 0-8-0 |
| సంగీతచింతామణి | 1-0-0 |
| సంగీత శ్రీకృష్ణకులాభారం చక్రనిసాం | } „ 0-12 0 |
| స్వతో సహా | |
| సంగీత పరిష్కారము | 0-12-0 |
| చిత్రసభియం | 1-8-0 |
| విహారసారంగధర | 1 8-0 |
| పాదుకాపట్టాభిషేకము | 1-4-0 |
| జయంతజయపాల | 0-8-0 |
| పాండవాజ్ఞాతనాసం | 0-8-0 |
| సంగీతలంకారనానము | 0-10-0 |
| సంగీతస్త్రీసాహసం | 0-12-0 |
| సంగీత సావిత్రి | 1-0-0 |
| మణిమాల | 0-12-0 |
| వేళాపాతబోధిని | 1-0-0 |
| చింతామణి కా వా | 1-2-0 |
| కోహిణీనుధాకరవిజయం | 0-12-0 |
| సుభద్రాస్థానియం | 0-12 0 |

ఆంధ్రానాటకములు.

| | |
|-----------------------|--------|
| సంగీత సత్యహరిశ్చంద్ర | 0-12-0 |
| కుశలన | 0-12-0 |
| ఊర్వశీకాపనిమోచనము | 0-12-0 |
| లీలావతి | 0-8-0 |
| సంగీతపద్మిని | 0 10-0 |
| సారంగధర | 0 12-0 |
| రసపుత్రవిజయం | 0 14-0 |
| ఆంధ్రానాటకకృతులు | 0-12-0 |
| విజయబొబ్బిలి | 0-12-0 |
| సంగీతజగన్మోహిని | 0-12-0 |
| శ్రీకృష్ణనిర్యాణము | 0-8-0 |
| పృథ్వీపతిపృథ్వీముఖం | 1-0-0 |
| సత్యహరిశ్చంద్రీయము | 1-0-0 |
| సంపూర్ణరామాయణం | 1-4-0 |
| శ్రీనివాసకల్యాణము | 0-8-0 |
| సౌగంధికం | 0-8-0 |
| కంఠాభరణము | 0-12-0 |
| ద్రౌపదివిరణయము | 0-12-0 |
| శ్రీరామ జననము దో శీ | 0-8-0 |
| శ్రీరామ పృథ్వీసము | 0-8-0 |
| శ్రీరామ పురోగము | 0-8-0 |
| శ్రీరామ విజయము | 0-8-0 |
| శ్రీరామ ఆశ్వమేధము | 0-8-0 |
| ఉపాపరిణయము | 0-8-0 |
| వేళామధురము | 0-12-0 |
| పరిష్కార బుద్ధి | 1-4-0 |



వలయువారిట్లు వ్రాయుడు:—

మాదేటి సన్యాసయ్య,
ఆంధ్రాబుక్కు-డిపో, రాజమండ్రి.

